हकेंवि में विशेषज्ञ व्याख्यान किया आयोजित

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़ : हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में विद्यार्थियों को विषय के व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग टेक्नोलाजी विभाग द्वारा मंगलवार को विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ के निर्देशन व मार्गदर्शन में आयोजित इस वेबिनार में मुख्य अतिथि के रूप में दीन बंधु छोटूराम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मुरथल के कुलपति प्रो. आरके अनायत उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में आइपीएएमए के अध्यक्ष व एशिया प्रिंट के उपाध्यक्ष, ग्लोबल प्रिंट एडवाइजर एस दयाकर रेड्डी, फाउंडेशन फार इनोवेटिव पैकेजिंग एंड सस्टेनेबलिटी के अध्यक्ष प्रो. एनसी शाह व अरसान गणेशन पोलिटेक्निक कॉलेज के प्रिंसीपल डा. एम नंद कुमार उपस्थित रहे।

प्रो. आरसी कुहाड़

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने अपने संदेश के माध्यम से इस तरह के आयोजनों को विद्यार्थियों को सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने बताया कि कार्यक्षेत्र के व्यावहारिक ज्ञान और उसमें निरंतर जारी बदलावों से अवगत कराने में इस तरह के आयोजन बेहद उपयोगी साबित होते हैं। कुलपति ने इस अवसर पर आत्मनिर्भर भारत अभियान का उल्लेख करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिखाए गए इस सपने को साकार करने की दिशा में अग्रसर हों और इस कार्य में युवा विद्यार्थियों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। कुलपति ने इस आयोजन में शामिल विशेषज्ञों का विशेष रूप से आभार व्यक्त किया। विश्वविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत इनोवेशन इन प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग टेक्नोलाजी विषय पर केंद्रित इस वेबिनार की शुरुआत विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ हुई और इस अवसर पर विश्वविद्यालय से संबंधित डाक्यूमेंट्री भी दिखाई गई। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने विषय परिचय प्रस्तुत किया। इसके पश्चात अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी पीठ के अधिष्ठाता डा. अजय बंसल ने अतिथियों का स्वागत किया और कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। वेबिनार में मुख्य अतिथि प्रो. आरके अनायत का परिचय छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता ने प्रस्तुत किया। इसके पश्चात प्रो. आरके अनायत ने बदलते समय के साथ प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग के क्षेत्र में आ रहे बदलावों से अवगत कराया और इस क्षेत्र में भविष्य निर्माण की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। प्रो. अनायत ने इस मौके पर ऑनलाइन एजुकेशन के बढ़ते प्रभाव पर भी विस्तार रसे चर्चा की। प्रो. अनायत ने हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की प्रगति के लिए विवि के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ के कुशल नेतृत्व की भी सराहना की। एस दयाकर रेड्डी ने प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग टेक्नोलाजी के क्षेत्र में विद्यार्थियों के रुझान और मौजूदा समय में इंडस्ट्री की जरूरतों पर चर्चा की।

CUH RELEASES BOOKLET ON NEP

Mahendragarh: The Central University of Haryana (CUH) released a booklet entitled, "National Education Policy (NEP)-2020 implementation plan: Strategic action plan and goals" to follow the strategic plan and goals for the successful implementation of the policy. Vice Chancellor Prof RC Kuhad said this booklet would benefit immensely in the implementation of the policy. It also presents the institutional priorities, in which ways are mentioned for the successful implementation of the education policy, he added.

The Tribune Tue, 29 June 2021 https://epaper.tribuneinc

'हकेंवि में विशेषज्ञ व्याख्यान आयोजित, पर्यटन एवं होटल प्रबंधन के विभिन्न आयामों से अवगत हुए प्रतिभागी'

महेंद्रगढ़, 28 जून (स.ह., परमजीत): हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के पर्यटन एवं होटल प्रबंधन विभाग द्वारा विद्यार्थियों को कार्यक्षेत्र की बारीकियों से अवगत करवाने हेतु विशेषज्ञ वैबिनार का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ के निर्देशन व मार्गदर्शन में आयोजित इस वैबिनार में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र में डीन अकादमिक अफेयर्स प्रोफैसर मंजुला चौधरी विशेषज्ञ वक्ता के रूप में उपस्थित रहीं।

कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने संदेश के माध्यम से ऐसे आयोजनों को विद्यार्थियों के लिए विषय के व्यावहारिक ज्ञान हेतु बेहद उपयोगी बताया। वैबिनार में विशेषज्ञ वक्ता प्रोफैसर मंजुला चौधरी ने विद्यार्थियों को पर्यटन के क्रमबद्ध विकास के बारे में बहुत विस्तार से अवगत करवाया। उन्होंने इस उद्योग में

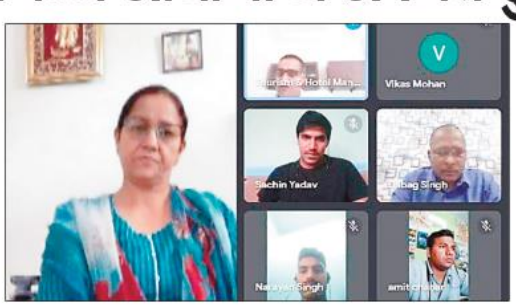

हकेंवि में आयोजित विशेषज्ञ व्याख्यान को सम्बोधित करते विशेषज्ञ।

उपलब्ध रोजगार के अवसरों के विषय में जानकारी देने के साथ-साथ विद्यार्थियों को पर्यटन के क्षेत्र रोजगार से संबंधित आवश्यकताओं को देखते हुए अपने आपको तैयार करने हेतु भी प्रोत्साहित किया।

प्रो. चौधरी ने अपने सम्बोधन में मौजूदा समय में बढ़ते तकनीकी उपयोग पर भी विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि कोरोना जैसी महामारी के समय में भी तकनीक पर्यटन जैसे उद्योग को वर्चुअल पर्यटन जैसे नए आयाम दे रही है।

इसके साथ ही उन्होंने पर्यटन से जुड़ने एवं उनके रुझानों को जानने के लिए सोशल मीडिया की उपयोगिता के बारे में भी बताया। व्याख्यान के अंत में विद्यार्थियों के द्वारा प्रस्तुत प्रश्नों के जवाब भी विशेषज्ञ ने दिए। व्याख्यान के आयोजन के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति ने सभी शिक्षकों को बधाई दी व विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रम विद्यार्थियों को पर्यटन के क्षेत्र में हो रहे बदलावों एवं विकास से अवगत कराने में मददगार हैं। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष डा. रणबीर सिंह ने बताया की विभाग विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयासरत हैं और इस तरह के विशेषज्ञ व्याख्यान विद्यार्थियों को उचित मार्गदर्शन देने एवं प्रोत्साहित करने हेतु अपनी अहम भूमिका निभाते हैं।

उन्होंने यह भी बताया की इस क्रम में आने वाले समय में भी विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाएगा एवं व्याख्यान करवाए जाएंगे। इस व्याख्यान में विभाग के सहायक सुश्री शिखा, विकास मोहन, विकास सिवाच, डा. दिलबाग सिंह एवं विभाग के सभी विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पर आधारित पाठ्यक्रम पुनर्निर्माण हेतु ऑनलाइन

महेंद्रगढ़, एनसीआर हरियाणा
(प्रदीप बालरोडिया)

नइ राष्ट्राय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन की दिशा में हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ योजनाबद्ध ढ़ंग से आगे बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय शिक्षा नीति के सफलतम क्रियान्वयन हेतु देश के विभिन्न शिक्षण संस्थानों की अपेक्षा उल्लेखनीय ढ़ंग से प्रयासरत है। इसी के परिणाम स्वरूप विश्वविद्यालय द्वारा निरंतर विशेषज्ञ व्याख्यानों, कार्यशालाओं व चर्चाओं का आयोजन किया जा रहा है। अवश्य ही विश्वविद्यालय के ये प्रयास नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्य को पाने में मददगार साबित होंगे। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.आर.सी. कुहाड़ ने मौलिक विज्ञान पीठ के द्वारा शिक्षा नीति व लर्निंग आउटकम बेस्ड करिकुलम फ्रेमवर्क (एलओसीएफ) पर आधारित पाठ्यक्रम निर्माण हेतु आयोजित कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रो. रीता कक्कड़, नेशनल केमिकल लेबोरेटरी, पुणे के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रो. ए.जे. वर्मा तथा इंटर यूनिवर्सिटी एस्कलेरेटर सेंटर (आईयूएसी), नई दिल्ली के प्रो. संदीप चोपड़ा उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय की मौलिक विज्ञान पीठ द्वारा आयोजित इस कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति ने प्रतिभागियों को बताया कि किस तरह से विश्वविद्यालय नई शिक्षा नीति के जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन हेतु प्रयासरत है। कुलपति ने बताया कि इस दिशा में निरंतर चर्चा, विमर्श, कार्यशालाओं व वेबिनार का आयोजन किया जा रहा है और इनके माध्यम से प्राप्त होने वाले उल्लेखनीय सुझावों को पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया में समाहित किया जा रहा है। कुलपति ने इस अवसर पर कहा कि 21वीं सदी में युवा पीढ़ी के विकास हेतु नई शिक्षा नीति एक महत्त्वपूर्ण प्रयास साबित होगी और इस कार्य में शिक्षण संस्थानों की भूमिका बेहद महत्त्वपूर्ण रहेगी। इसी क्रम में विशेषज्ञ वक्ता प्रो. ए.जे. वर्मा, डॉ. संदीप चोपड़ा व प्रो. रीता कक्कड़ ने विषय पर बारीकी से प्रकाश डाला और मौलिक विज्ञान पीठ के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विषयों में आवश्यक पाठ्यक्रम संबंधी बदलावों पर चर्चा की। विश्वविद्यालय में मौलिक विज्ञान पीठ के अधिष्ठाता डॉ. विनोद कुमार ने इस आयोजन में विश्वविद्यालय के शैक्षणिक अधिष्ठाता प्रो. संजीव कुमार व शोध अधिष्ठाता प्रो. नीलम सांगवान का सहयोग के लिए धन्यवाद किया। साथ ही सहभागी शिक्षकों की भागीदारी के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत आवश्यक है पाठ्यक्रम में बदलाव

विवि में निरंतर व्याख्यानों, कार्यशालाओं व चर्चाओं का आयोजन

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़: नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन की दिशा में हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ योजनाबद्ध ढंग से आगे बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय शिक्षा नीति के सफलतम क्रियान्वयन हेतु देश के विभिन्न शिक्षण संस्थानों की अपेक्षा उल्लेखनीय ढंग से प्रयासरत है। इसी के परिणाम स्वरूप विश्वविद्यालय द्वारा निरंतर विशेषज्ञ व्याख्यानों, कार्यशालाओं व चर्चाओं का आयोजन किया जा रहा है। अवश्य ही विश्वविद्यालय के ये प्रयास नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्य को पाने में मददगार साबित होंगे। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने मौलिक विज्ञान पीठ के द्वारा शिक्षा नीति व लर्निंग आउटकम बेस्ड करिकुलम फ्रेमवर्क पर आधारित पाठ्यक्रम निर्माण हेतु आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रो. रीता कक्कड़, नेशनल केमिकल

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ● साभार स्वयं

लेबोरेटरी, पुणे के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रो. एजे वर्मा तथा इंटर यूनिवर्सिटी एस्कलेरेटर सेंटर नई दिल्ली के प्रो. संदीप चोपड़ा उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय की मौलिक विज्ञान पीठ द्वारा आयोजित इस कार्यशाला को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने प्रतिभागियों को बताया कि किस तरह से विश्वविद्यालय नई शिक्षा नीति के जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन हेतु प्रयासरत है। कुलपति ने बताया कि इस दिशा में निरंतर चर्चा, विमर्श, कार्यशालाओं व वेबिनार का आयोजन किया जा रहा है और इनके माध्यम से प्राप्त होने वाले उल्लेखनीय सुझावों को पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया में समाहित किया जा रहा है। कुलपति ने इस अवसर पर कहा कि 21 वीं सदी में युवा पीढ़ी के विकास हेतु नई शिक्षा नीति एक महत्वपूर्ण प्रयास साबित होगी और इस कार्य में शिक्षण संस्थानों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रहेगी। इसी क्रम में विशेषज्ञ वक्ता प्रो. एजे वर्मा, डा. संदीप चोपड़ा व प्रो. रीता कक्कड़ ने विषय पर बारीकी से प्रकाश डाला और मौलिक विज्ञान पीठ के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विषयों में आवश्यक पाठ्यक्रम संबंधी बदलावों पर चर्चा की। विश्वविद्यालय में मौलिक विज्ञान पीठ के अधिष्ठाता डा. विनोद कुमार ने इस आयोजन में विश्वविद्यालय के शैक्षणिक अधिष्ठाता प्रो. संजीव कुमार व शोध अधिष्ठाता प्रो. नीलम सांगवान व सहभागी शिक्षकों की भागीदारी के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

राष्ट्रीय खबर ब्यूरो

चंडीगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ में आजादी का अमृत महोत्सव के तहत एक दिवसीय विशेषज्ञ कार्यशाला का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग विभाग द्वारा डेवलपिंग कम्प्यूटर कोड्स डयूरिंग ऑनलाइन लर्निंग विषय पर आयोजित इस कार्यशाला की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने की जबकि मैम्मा रिसर्च एंड कंसल्टेंसी सर्विस के निदेशक डॉ. गौरव मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने कहा कि कोरोना महामारी के चलते शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियां और अवसर दोनों ही हमारे सम्मुख उपस्थित हुए हैं। लॉकडाउन में जहां प्रत्यक्ष अध्यापन कार्य बाधित हुआ है वहीं शिक्षकों व विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शिक्षण व अध्ययन को अपनाया है।

इस बदलाव के बीच कम्प्यूटर एप्लीकेशंस ने सभी स्तर पर अपने प्रभाव को स्थापित किया है। जिसके परिणाम स्वरूप आज यह सभी के लिए उपयोगी साबित हो रहे हैं। कुलपति ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिखाए गए आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने की दिशा में इस

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र के पेशेवरों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल अधिकारी प्रो. सारिका शर्मा ने बताया कि यह कार्यशाला भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला का एक हिस्सा थी। विशेषज्ञ वक्ता मैम्मा रिसर्च एंड कंसल्टेंसी सर्विस के निदेशक डॉ. गौरव ने कार्यशाला को सम्बोधित किया और प्रतिभागियों के साथ एक संवादात्मक तकनीकी सत्र के माध्यम से इस क्षेत्र से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत कराया। स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी के डीन डॉ. अजय बंसल ने कहा कि आज के दौर में विभिन्न क्षेत्रों में कम्प्यूटर का प्रयोग बढ़ा है और इसके परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र में प्रशिक्षित युवाओं की भारी मांग है। कम्प्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार ने इस आयोजन में सहयोग करने वाले सहभागियों की सराहना की और कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों से विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है जोकि उनके सफल भविष्य के लिए उपयोगी है।

'हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में एक दिवसीय विशेषज्ञ कार्यशाला आयोजित'

महेंद्रगढ़, 26 जून (मोहन, परमजीत): हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में आजादी का अमृत महोत्सव के तहत एक दिवसीय विशेषज्ञ कार्यशाला का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग विभाग द्वारा डिवैल्पिंग कम्प्यूटर कोड्स डयूरिंग ऑनलाइन लर्निंग विषय पर आयोजित इस कार्यशाला की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने की जबकि मैग्मा रिसर्च एंड कंसल्टैंसी सर्विस के निदेशक डा. गौरव मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने कहा कि कोरोना महामारी के चलते शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियां और अवसर दोनों ही हमारे समक्ष उपस्थित हुए हैं। लॉकडाउन में जहां प्रत्यक्ष अध्यापन कार्य बाधित हुआ है, वहीं शिक्षकों व विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शिक्षण व अध्ययन को अपनाया है। इस बदलाव के बीच कम्प्यूटर एप्लीकेशंस ने सभी स्तर पर अपने प्रभाव को स्थापित किया है, जिसके परिणामस्वरूप आज यह सभी के लिए उपयोगी साबित हो रहे हैं।

कुलपति ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिखाए गए आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने की दिशा में इस सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र के पेशेवरों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कार्यशाला की अध्यक्षता करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़।

आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल अधिकारी प्रो. सारिका शर्मा ने बताया कि यह कार्यशाला भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला का एक हिस्सा थी। विशेषज्ञ वक्ता मैग्मा रिसर्च एंड कंसल्टैंसी सर्विस के निदेशक डा. गौरव ने कार्यशाला को सम्बोधित किया और प्रतिभागियों के साथ एक संवादात्मक तकनीकी सत्र के माध्यम से इस क्षेत्र से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत कराया।

स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग टैक्नोलॉजी के डीन डा. अजय बंसल ने कहा कि आज के दौर में विभिन्न क्षेत्रों में कम्प्यूटर का प्रयोग बढ़ा है और इसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में प्रशिक्षित युवाओं की भारी मांग है। कम्प्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष डा. राकेश कुमार ने इस आयोजन में सहयोग करने वाले सहभागियों की सराहना की और कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों से विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है जोकि उनके सफल भविष्य के लिए उपयोगी है।

कंप्यूटर का प्रयोग बढ़ा तो प्रशिक्षित युवाओं की भारी मांग भी बढ़ी

हकेंवि में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▸▸| महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव के तहत एक दिवसीय विशेषज्ञ कार्यशाला का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग विभाग द्वारा डवलपिंग कंप्यूटर कोड्स ड्यूरिंग ऑनलाइन लर्निंग विषय पर आयोजित इस कार्यशाला की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने की, जबकि मैग्मा रिसर्च एंड कंसल्टेंसी सर्विस के निदेशक डॉ. गौरव मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

महेंद्रगढ़। कार्यशाला में आनलाइन भाग लेते हुए प्रतिभागी। फोटो : हरिभूमि

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति ने कहा कि कोरोना महामारी के चलते शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियां और अवसर दोनों ही हमारे समक्ष उपस्थित हुए हैं। लॉकडाउन में जहां प्रत्यक्ष अध्यापन कार्य बाधित हुआ है। वहीं शिक्षकों व विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शिक्षण व अध्ययन को अपनाया है। इस बदलाव के बीच कम्प्यूटर एप्लीकेशंस ने सभी स्तर पर अपने प्रभाव को स्थापित किया है, जिसके परिणाम स्वरूप आज यह सभी के लिए उपयोगी साबित हो रहे हैं। स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी के डीन डॉ. अजय बंसल ने कहा कि आज के दौर में विभिन्न क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रयोग बढ़ा है और इसके परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र में प्रशिक्षित युवाओं की भारी मांग है।

महत्वपूर्ण जानकारियों से करवाया अवगत

कुलपति ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिखाए गए आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने की दिशा में इस सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र के पेशेवरों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल अधिकारी प्रो. सारिका शर्मा ने बताया कि यह कार्यशाला भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला का एक हिस्सा थी। विशेषज्ञ वक्ता मैग्मा रिसर्च एंड कंसल्टेंसी सर्विस के निदेशक डॉ. गौरव ने कार्यशाला को संबोधित किया और प्रतिभागियों के साथ एक संवादात्मक तकनीकी सत्र के माध्यम से इस क्षेत्र से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत कराया।

हरियाणा केंद्रीय विवि में कार्यशाला का आयोजन

हकेंवि में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ (दाईं ओर ऊपर वाले कोने में)। • साभार हकेंवि

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़ : हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में आजादी का अमृत महोत्सव के तहत एक दिवसीय विशेषज्ञ कार्यशाला का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग विभाग द्वारा डवलपिंग कंप्यूटर कोड्स ड्यूरिंग ऑनलाइन लर्निंग विषय पर आयोजित इस कार्यशाला की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने की, जबकि मैग्मा रिसर्च एंड कंसल्टेंसी सर्विस के निदेशक डा. गौरव मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि कोरोना महामारी के चलते शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियां और अवसर दोनों ही हमारे समक्ष उपस्थित हुए हैं। लाकडाउन में जहां प्रत्यक्ष अध्यापन कार्य बाधित हुआ है वहीं शिक्षकों व विद्यार्थियों ने ऑनलाइन शिक्षण व अध्ययन को अपनाया है। इस बदलाव के बीच कम्प्यूटर एप्लीकेशंस ने सभी स्तर पर अपने प्रभाव को स्थापित किया है। जिसके परिणाम स्वरूप आज यह सभी के लिए उपयोगी साबित हो रहे हैं। कुलपति ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिखाए गए आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने की दिशा में इस सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र के पेशेवरों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल अधिकारी प्रो. सारिका शर्मा ने बताया कि यह कार्यशाला भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला का एक हिस्सा थी। विशेषज्ञ वक्ता मैग्मा रिसर्च एंड कंसल्टेंसी सर्विस के निदेशक डा. गौरव ने कार्यशाला को सम्बोधित किया और प्रतिभागियों के साथ एक संवादात्मक तकनीकी सत्र के माध्यम से इस क्षेत्र से जुड़ी महत्त्वपूर्ण जानकारियों से अवगत कराया। स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी के डीन डा. अजय बंसल ने कहा कि आज के दौर में विभिन्न क्षेत्रों में कम्प्यूटर का प्रयोग बढ़ा है और इसके परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र में प्रशिक्षित युवाओं की भारी मांग है। कम्प्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष डा. राकेश कुमार ने इस आयोजन में सहयोग करने वाले सहभागियों की सराहना की।

ज्योतिष

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन का प्रारूप किया प्रकाशित

राष्ट्रीय खबर ब्यूरो

चंडीगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन की दिशा पहल करते हुए देश के सभी विश्वविद्यालयों व शिक्षण संस्थानों को पीछे छोड़ते हुए इसके क्रियान्वयन का विस्तृत प्रारूप प्रकाशित कर दिया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ की अध्यक्षता में शुक्रवार को आयोजित विभिन्न संकायों के अधिष्ठाताओं व विभागाध्यक्षों की बैठक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 क्रियान्वयन योजना नाम से पुस्तिका जारी की गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने बताया कि यह पुस्तिका नई शिक्षा नीति के सफलतम क्रियान्वयन के लिए आवश्यक योजनागत प्रक्रिया व निर्धारित लक्ष्यों का उल्लेख करती है। यह प्रारूप नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में उपयोगी सिद्ध होगा।

विश्वविद्यालय के प्रशासनिक खण्ड स्थित सम्मेलन कक्ष में आयोजित महत्वपूर्ण बैठक में कुलपति ने विश्वविद्यालय द्वारा गठित एनईपी टास्कफोर्स के द्वारा तैयार इस दस्तावेज को प्रस्तुत किया। इसमें प्रमुख रूप से मल्टीडिसिप्लिनरी एंड होलिस्टिक एजुकेशन, इक्विटी एंड इन्क्लूजन इन हायर एजुकेशन, मोटिवेटिड, एनर्जाइज्ड एंड केपेबल फैकल्टी, टेक्नोलॉजी यूज एंड इंटिग्रेशन, स्पेशल आस्पेक्ट्स ऑफ हायर एजुकेशन, प्रमोशन ऑफ इंडियन नॉलेज सिस्टम, लैंग्वेज, कल्चर एंड वेल्यूज, रिसर्च, इनोवेशन एंड रैंकिंग तथा इंटीग्रेटिड हायर एजुकेशन पर विस्तृत कार्ययोजना व लक्ष्यों को प्रस्तुत किया गया है। कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने कहा कि यह लिखित प्रपत्र चरणबद्ध प्राथमिकताओं को प्रस्तुत करता है, जिसमें शिक्षा नीति के सफलतम क्रियान्वयन हेतु स्पष्ट प्रणाली का उल्लेख है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 प्रकाशित होने के बाद, जब सभी विश्वविद्यालय शिक्षा मंत्रालय से आगे आने वाले दिशानिर्देशों के लिए प्रतीक्षा में थे, तब हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय ने अपने यहां इसके क्रियान्वयन के लिए टास्क फोर्स का गठन किया और टास्क फोर्स ने विश्वविद्यालय के विभिन्न आचार्यों और विश्वविद्यालय के बाहर शिक्षा जगत के विद्वानों के साथ मिलकर इसके क्रियान्वयन के लिए एक प्रारूप तैयार किया, जिसे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक परिषद ने अनुमोदित किया। गई महीने में सभी विभागों के विभागाध्यक्षों ने अपने पाठ्यक्रम में नई शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप किए जाने वाले परिवर्तनों की प्रति का ब्यौरा सबके समक्ष रखा। कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ के लगातार प्रयास के कारण ही विश्वविद्यालय के सभी आचार्यों को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन के संबंध में अधिक जानकारियां हैं, और वह अपने पाठ्यक्रम में उसके अनुरूप समयानुकूल परिवर्तन कर रहे हैं। आने वाले समय में हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा तैयार किए गए पाठ्यक्रम दूसरे विश्वविद्यालय के लिए आधार स्तंभ का कार्य करेंगे।

इस अवसर पर उपस्थित विभिन्न अधिष्ठाताओं व विभागाध्यक्षों ने विश्वविद्यालय की ओर से जारी इस दस्तावेज को बेहद उपयोगी बताया। उन्होंने इस कार्य में विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ के द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन का उल्लेख विशेष रूप से किया। शिक्षकों का कहना था कि यह माननीय कुलपति की प्रेरणा व मार्गदर्शन ही था जिसके परिणाम स्वरूप हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की दिशा में सबसे अग्रणी विश्वविद्यालय के रूप में खड़ा नजर आ रहा है। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कुलपति ने परिसर में पौधारोपण कार्यक्रम में हिस्सा लिया और कहा कि जिस तरह से नई शिक्षा नीति भारतीय युवाओं के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगी, उसी प्रकार पौधारोपण का यह प्रयास प्रकृति के संरक्षण व उसके विकास में योगदान देगा। ज्ञातव्य है कि हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय वन महोत्सव का आयोजन कर रहा है। कुलपति महोदय ने प्रत्येक शिक्षक से कम से कम पांच वृक्ष विश्वविद्यालय के परिसर में लगाने का आह्वान किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अधिकारियों, कर्मचारियों और शिक्षकों को पर्याप्त स्थान पर अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने की अपील की, ताकि भविष्य के लिए प्रकृति का संरक्षण बना रहे। उन्होंने कहा कि मानसून से पहले यदि वृक्षारोपण किया जाए, तो बिना किसी अधिक मेहनत के उनके बढ़ने की संभावना रहती है।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय ने प्रारूप किया प्रकाशित

नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में उपयोगी सिद्ध होगा प्रारूप

महेंद्रगढ़। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के प्रारूप की पुस्तिका का विमोचन करते कुलपति। *फोटो: हरिभूमि*

विभिन्न अधिष्ठाताओं व विभागाध्यक्षों ने विश्वविद्यालय की ओर से जारी इस दस्तावेज की बेहद उपयोगी बताया

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन की दिशा पहल करते हुए देश के सभी विश्वविद्यालयों व शिक्षण संस्थानों को पीछे छोड़ते हुए इसके क्रियान्वयन का विस्तृत प्रारूप प्रकाशित कर दिया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ की अध्यक्षता में शुक्रवार को आयोजित विभिन्न संकायों के अधिष्ठाताओं व विभागाध्यक्षों की बैठक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 क्रियांवयन योजना नाम से पुस्तिका जारी की गई। विश्वविद्यालय के कुलपति ने बताया कि यह पुस्तिका नई शिक्षा नीति के सफलतम क्रियान्वयन के लिए आवश्यक योजनागत प्रयासों व निर्धारित लक्ष्यों का इंगित करती है। यह प्रारूप नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में उपयोगी सिद्ध होगा। विश्वविद्यालय के प्रशासनिक खंड स्थित सम्मेलन कक्ष में आयोजित महत्त्वपूर्ण बैठक में कुलपति ने विश्वविद्यालय द्वारा गठित एनईपी टास्कफोर्स के द्वारा तैयार इस दस्तावेज को प्रस्तुत किया। इसमें प्रमुख रूप से मल्टीडिस्प्लनरी एंड होलस्टिक एजुकेशन, इक्विटी एंड इनक्लूजन इन हॉयर एजुकेशन, मोटिवेटिड, एनरजाइड एंड केपेबल फैकल्टी, टेकनोलॉजी यूज एंड इंटीग्रेशन, ग्लोबल आउटरीच ऑफ हॉयर ऐजुकेशन, प्रमोशन ऑफ इंडियन नॉलेज सिस्टम, लेंग्वेज, कल्चर एंड वेल्यूज, रिसर्च, इनोवेशन एंड रैंकिग्स तथा इंटीग्रेटिड हॉयर एजुकेशन पर विस्तृत कार्ययोजना व लक्ष्यों को प्रस्तुत किया गया है। कुलपति ने कहा कि यह लिखित प्रमाण संस्थागत प्राथमिकताओं को प्रस्तुत करता है। जिसमें शिक्षा नीति के सफलतम क्रियान्वयन हेतु क्रमबद्ध प्रयासों का उल्लेख है। इस अवसर पर उपस्थित विभिन्न अधिष्ठाताओं व विभागाध्यक्षों ने विश्वविद्यालय की ओर से जारी इस दस्तावेज की बेहद उपयोगी बताया। उन्होंने इस कार्य में विश्वविद्यालय कुलपति के द्वारा दिए गए दिशा-निदेशों व मार्गदर्शन का उल्लेख विशेष रूप से किया। शिक्षकों का कहना था कि यह माननीय कुलपति की प्रेरणा व मार्गदर्शन ही था। जिसके परिणाम स्वरूप हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की दिशा में सबसे अग्रणी विश्वविद्यालय के रूप में खड़ा नजर आ रहा है। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कुलपति ने परिसर में पौधारोपण कार्यक्रम में हिस्सा लिया और कहा कि जिस तरह से नई शिक्षा नीति भारतीय युवाओं के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगीए उसी प्रकार पौधारोपण का यह प्रयास प्रकृति के संरक्षण व उसके विकास में योगदान देगा।

हकेवि में शुरू हुआ केंद्रीय उपकरण केंद्र

महेंद्रगढ़, प्रवीण कुमार (पंजाब केसरी) : हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ में गुरुवार को केंद्रीय उपकरण केंद्र की शुरूआत हुई। इस केंद्र का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने किया। उन्होंने इस अवसर पर इस केंद्र को शोध व अनुसंधान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान प्रदान करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि यह केंद्र उन्नत मशीनों से युक्त है जो कि शोध की आवश्यकता है। उन्नत वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में छात्रों और शिक्षकों के लिए ये मशीनें अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगी। कुलपति ने इस अवसर पर कहा कि इस केंद्र में उपलब्ध विशिष्ट उपकरण न सिर्फ विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शोधार्थियों व शिक्षकों के लिए उपलब्ध होंगे बल्कि विश्वविद्यालय प्रदेश व देश के अन्य शिक्षण संस्थानों के साथ भी इन उपकरणों की शिक्षण और अनुसन्धान हेतु साझेदारी करेगा। विश्वविद्यालय के अंत:विषयी व अनुप्रयुक्त विज्ञान पीठ तथा मौलिक विज्ञान पीठ के साझा प्रयासों से स्थापित इस केंद्रीय उपकरण केंद्र में तरल क्रोमैटोग्राफी-मास स्पेक्ट्रोमेट्री (एलसी-एमएस),

- **कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ बोले शोध कार्यों को मिलेगी गति**

परमाणु चुंबकीय अनुनाद (एनएमआर) और परमाणु बल माइक्रोस्कोपी (एएफएम) शामिल हैं। लिक्विड क्रोमैटोग्राफी-मास स्पेक्ट्रोमेट्री (एलसी-एमएस) एक विश्लेषणात्मक रसायन विज्ञान तकनीक है जो मास स्पेक्ट्रोमेट्री की मास विश्लेषण क्षमताओं के साथ तरल क्रोमैटोग्राफी (या एचपीएलसी) की भौतिक पृथक्करण क्षमताओं को जोड़ती है। इसी तरह परमाणु चुंबकीय अनुनाद (एनएमआर) स्पेक्ट्रोस्कोपी एक विश्लेषणात्मक रसायन विज्ञान तकनीक है जिसका उपयोग गुणवत्ता नियंत्रण और अनुसंधान में एक नमूने की सामग्री और शुद्धता के साथ-साथ इसकी आणविक संरचना को निर्धारित करने के लिए किया जाता है तथा परमाणु बल माइक्रोस्कोपी (एएफएम) स्कैनिंग जांच माइक्रोस्कोपी का एक उच्च-रिजॉल्यूशन रूप है जिसका उपयोग नमूने के त्रि-आयामी स्थलाकृतिक प्रतिनिधित्व का उत्पादन करने के लिए किया जाता है।

हकेंवि ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन का प्रारूप किया प्रकाशित

महेंद्रगढ़| हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन की दिशा पहल करते हुए देश के सभी विश्वविद्यालयों व शिक्षण संस्थानों को पीछे छोड़ते हुए इसके क्रियान्वयन का विस्तृत प्रारूप प्रकाशित कर दिया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ की अध्यक्षता में शुक्रवार को आयोजित विभिन्न संकायों के अधिष्ठाताओं व विभागाध्यक्षों की बैठक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 क्रियान्वयन योजना नाम से पुस्तिका जारी की गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने बताया कि यह पुस्तिका नई शिक्षा नीति के सफलतम क्रियान्वयन के लिए आवश्यक योजनागत प्रयासों व निर्धारित लक्ष्यों का इंगित करती है। कुलपति ने एनईपी टास्कफोर्स के द्वारा तैयार दस्तावेज को प्रस्तुत किया। इसमें प्रमुख रूप से मल्टीडिस्प्लनरी एंड होलस्टिक एजुकेशन, इक्विटी एंड इनक्लूजन इन हॉयर एजुकेशन, मोटिवेटिड, एनरजाइड एंड केपेबल फैकल्टी, टेकनोलॉजी यूज एंड इंटीग्रेशन, ग्लोबल आउटरीच ऑफ हॉयर ऐजुकेशन, प्रमोशन ऑफ इंडियन नॉलेज सिस्टम, लेंग्वेज, कल्चर एंड वेल्यूज, रिसर्च, इनोवेशन एंड रैंकिग्स तथा इंटीग्रेटिड हॉयर एजुकेशन पर विस्तृत कार्ययोजना व लक्ष्यों को प्रस्तुत किया गया है। कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने कहा कि यह लिखित प्रमाण संस्थागत प्राथमिकताओं को प्रस्तुत करता है, जिसमें शिक्षा नीति के सफलतम क्रियान्वयन हेतु क्रमबद्ध प्रयासों का उल्लेख है।

समग्र स्वास्थ्य योग के एकीकृत दृष्टिकोण से ही सम्भव : कुहाड़

महेंद्रगढ़, प्रवीण कुमार (पंजाब केसरी): हरियाणा केंद्रीय विश्व विद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के योग विभाग व राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई के प्रयासों से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष में शनिवार को राष्ट्रीय योग वेबिनार का आयोजन किया। आज के इस वेबीनार के मुख्य वक्ता के रूप में शिमला विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश के योग विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर जीडी शर्मा ने अपने विचार 'एकीकृत दवाओं के दृष्टिकोण' जिसमें योग और जीवन विज्ञान से संबंधित ज्ञान पर अपनी बात प्रतिभागियों के समक्ष प्रस्तुत की। इसी के साथ ही केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक व आयुष मंत्रालय भारत सरकार के पूर्व सलाहकार, वर्तमान में मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान नई दिल्ली में योग चिकित्सा के कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर ईश्वर एन आचार्य ने योग और प्राकृतिक चिकित्सा कैसे एकीकृत दवाओं के रूप में प्रयोग हो सकते हैं, विषय पर अपना दृष्टिकोण रखा। इससे पूर्व हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने अपने संदेश में योग विभाग द्वारा आयोजित किए जा रहे राष्ट्रीय योग वेबीनार के विषय को आज के परिपेक्ष में प्रासंगिक बताया। उन्होंने कहा कि आज जरूरत है कि आधुनिक चिकित्सा पद्धतियां, प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के साथ मिलकर विकार ग्रस्त मानवता को स्वास्थ्य लाभ की दिशा में न केवल चिकित्सा प्रदान करें, बल्कि उन्हें स्व-चिकित्सा के लिए थोड़ा चिकित्सीय ज्ञान भी प्रदान करें तो और अच्छा रहेगा। योग विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो.नीलम सांगवान ने अतिथियों का स्वागत किया और उन्हें विश्वविद्यालय के आमन्त्रण को स्वीकार करने के लिए धन्यवाद भी दिया।

समग्र स्वास्थ्य योग के एकीकृत दृष्टिकोण से ही संभव : प्रो. कुहाड़

जगमार्ग न्यूज

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के योग विभाग ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष में शनिवार को राष्ट्रीय योग वेबिनार का आयोजन किया गया।

इस वेबीनार के मुख्य वक्ता के रूप में शिमला विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश के योग विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर जीडी शर्मा ने अपने विचार 'एकी कृत दवाओं के दृष्टिकोण' जिसमें योग और जीवन विज्ञान से संबंधित ज्ञान पर अपनी बात प्रतिभागियों के समक्ष प्रस्तुत की। इसी के साथ ही केंद्रीय योग एवं प्रा कृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक व आयुष मंत्रालय भारत सरकार के पूर्व सलाहकार, वर्तमान में मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान नई दिल्ली में योग चिकित्सा के कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर ईश्वर एन आचार्य ने योग और प्राकृतिक चिकित्सा कैसे एकीकृत दवाओं के रूप में प्रयोग हो सकते हैं, विषय पर अपना दृष्टिकोण रखा। इससे पूर्व हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने अपने संदेश में योग विभाग द्वारा आयोजित किए जा रहे राष्ट्रीय योग वेबीनार के विषय को आज के परिपेक्ष में प्रासंगिक बताया गया।

हकेंवि में राष्ट्रीय योग वेबिनार का हुआ आयोजन

जगत क्रांति ⏭ महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के योग विभाग व राष्ट्रीय सेवा योजना(एनएसएस) इकाई के प्रयासों से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष में शनिवार को राष्ट्रीय योग वेबिनार का आयोजन किया। आज के इस वेबीनार के मुख्य वक्ता के रूप में शिमला विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश के योग विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर जीडी शर्मा ने अपने विचार 'एकीकृत दवाओं के दृष्टिकोण' जिसमें योग और जीवन विज्ञान से संबंधित ज्ञान पर अपनी बात प्रतिभागियों के समक्ष प्रस्तुत की। इसी के साथ ही केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक व आयुष मंत्रालय भारत सरकार के पूर्व सलाहकार, वर्तमान में मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान नई दिल्ली में योग चिकित्सा के कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर ईश्वर एन आचार्य ने योग और प्राकृतिक चिकित्सा कैसे एकीकृत दवाओं के रूप में प्रयोग हो सकते हैं, विषय पर अपना दृष्टिकोण रखा। इससे पूर्व हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी.कुहाड़ ने अपने संदेश में योग विभाग द्वारा आयोजित किए जा रहे राष्ट्रीय योग वेबीनार के विषय को आज के परिपेक्ष में प्रासंगिक बताया। उन्होंने कहा कि आज जरूरत है कि आधुनिक चिकित्सा पद्धतियां, प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के साथ मिलकर विकार ग्रस्त मानवता को स्वास्थ्य लाभ की दिशा में न केवल चिकित्सा प्रदान करें, बल्कि उन्हें स्व-चिकित्सा के लिए थोड़ा चिकित्सीय ज्ञान भी प्रदान करें तो और अच्छा रहेगा।

योग व प्राकृतिक चिकित्सा स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण

महेंद्रगढ़ | हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के योग विभाग ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में शनिवार को राष्ट्रीय योग वेबिनार का आयोजन किया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में शिमला विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश के योग विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर जीडी शर्मा ने अपने विचार 'एकीकृत दवाओं के दृष्टिकोण' जिसमें योग और जीवन विज्ञान से संबंधित ज्ञान पर अपनी बात प्रतिभागियों के समक्ष प्रस्तुत की। इसी के साथ ही केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक व आयुष मंत्रालय के पूर्व सलाहकार, वर्तमान में मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान नई दिल्ली में योग चिकित्सा के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ईश्वर एन आचार्य ने योग और प्राकृतिक चिकित्सा कैसे एकीकृत दवाओं के रूप में प्रयोग हो सकते हैं, विषय पर अपना दृष्टिकोण रखा।

इससे पहले कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने वेबिनार के विषय को आज के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक बताया। विभागाध्यक्षा प्रो. नीलम सांगवान ने अतिथियों का स्वागत किया। योग विभाग के सहायक आचार्य और शिक्षक प्रभारी डॉ. अजय पाल ने बताया कि आगामी 21 जून सप्तम अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। रविवार को आयोजित होने वाला योग दिवस का कार्यक्रम सुबह 6:00 बजे से 8:30 बजे तक चलेगा। जिसमें विवि के सभी विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और स्थानीय लोगों की प्रतिभागिता हेतु प्रयास किया जा रहा है।

योगाभ्यास की भूमिका महत्वपूर्ण : प्रो. आरसी कुहाड़

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़ : हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के योग विभाग ने 'रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में योगाभ्यास की भूमिका' पर राष्ट्रीय योग वेबिनार का आयोजन किया जिसमें विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रमेश चंद्र कुहाड़ ने संदेश के माध्यम से योग को जन-जन तक पहुंचाने के लिए विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों को तैयार रहने के लिए कहा और उन्होंने सप्तम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को बड़े स्तर पर मनाने के लिए निर्देशित किया। अपने संदेश में कुलपति ने योग से जुड़े रहने की सलाह भी दी। शुक्रवार को आयोजित इस वेबिनार के मुख्य वक्ता देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुंज, हरिद्वार, उत्तराखण्ड के आचार्य डा. असीम कुलश्रेष्ठ और डा. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, मध्य प्रदेश से आचार्य डा. अरुण कुमार साव ने अपने विचार व्यक्त किए। इस वेबिनार का प्रारम्भ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली डाक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई गई। योग विभाग की विभागाध्यक्षा डा. नीलम सांगवान ने अतिथियों का स्वागत किया। प्रो. कुहाड़ ने बताया कि योग भारतीय ज्ञान और संस्कृति का प्रतीक है। हमारे ऋषियों ने शरीर की आन्तरिक संरचना को न केवल स्थूल रूप से जाना बल्कि उसके सूक्ष्म और कारण स्वरूप को जानकर योग जैसी महान विज्ञान पर अनुसंधान किया। शरीर कैसे निरोगी और स्वस्थ रहे उसके लिए उन्होंने योग की महत्वपूर्ण विधियों की खोज की। जिनके द्वारा व्यक्ति न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक और अध्यात्मिक स्तर पर भी स्वस्थ रह सकता है। स्वास्थ्य की परिभाषा में स्वास्थ्य के जिन आयामों की चर्चा की गई है। उन सभी आयामों पर योग अपना प्रभाव डालता है और व्यक्ति को हर तरीके से स्वस्थ बनाता है। योग न केवल व्यक्ति को स्वस्थ बनाता है बल्कि वह योग के द्वारा अपने शरीर में स्थित उपत्तिकाओं (ऊर्जा के छोटे केन्द्रों), चक्रों, नाड़ियों और प्राण के केन्द्रों को जागृत कर उसे पुरुषार्थ के चरम लक्ष्य-मोक्ष तक पहुंचा सकता है। शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम शरीर ही सभी धर्मों (कर्त्तव्यों) को पूरा करने का साधन है। अर्थात शरीर को सेहतमंद बनाए रखना जरूरी है। अतः रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में योग के अभ्यासों की भूमिका बहुत ही उपयोगी है, आज के व्याख्यान में उसी भूमिका पर अतिथि व्याख्याताओं ने प्रकाश डाला। प्रो. कुहाड़ ने कहा कि योग को सर्वसम्मति से संयुक्त राष्ट्र संघ में पारित होना योग की स्वीकारोक्ति को दर्शाता है। उसके महत्व को प्रदर्शित करता है। इसके लिए हम सभी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विशेष आभार व्यक्त करना चाहिए, जिनके प्रयास से आयुष मंत्रालय बना और भारतीय चिकित्सा पद्धति को एक वैश्विक पहचान मिली। ।

कार्यक्रम में विशेषज्ञ वक्ता डा. असीम कुलश्रेष्ठ ने योग के विषय में कहा कि यह वह माध्यम है, जिसकी मदद से हम गंभीर से गंभीर बीमारियों का निदान पा सकते हैं। प्रो. अरूण कुमार साव ने भी रोग प्रतिरोधक क्षमता के विकास में योग की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन विभाग के सहायक आचार्य और शिक्षक प्रभारी डा. अजय पाल ने किया, अतिथियों का परिचय विभाग के ही सहायक आचार्य डा. रवि कुमार शास्त्री ने किया। धन्यवाद ज्ञापन शिक्षा विभाग के आचार्य डा. दिनेश चहल ने किया। यह पूरा कार्यक्रम विभाग की विभागाध्यक्षा डा. नीलम सांगवान और विभाग के संयोजक डा. रविंद्र पाल अहलावत विशेष सहयोग से संपन्न हुआ।

'शिक्षण, प्रशिक्षण और परीक्षण ऐसा हो कि उपाधि प्राप्त विद्यार्थी कार्य सक्षम बन सकें : प्रो. आर.सी. कुहाड़'

शैक्षणिक स्तर में वे सभी बदलाव जरूरी जो विद्यार्थियों को वैश्विक आवश्यकता के अनुरूप गढ़ सकें

महेंद्रगढ़, 17 जून (मोहन, परमजीत): विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और भारतीय शैक्षिक तकनीकी परिषद का उद्देश्य उच्चतर संस्थानों में शैक्षणिक स्तर को गुणवत्तापूर्ण बनाना है, इसके लिए उन्होंने एक मार्गदर्शिका बनाई है। इसी क्रम में उन्होंने आकलन और मूल्यांकन की प्रक्रिया के लिए भी आमूलचूल परिवर्तन किया है, जोकि वर्तमान समय के संदर्भ में उपयुक्त प्रतीत होता है। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने कहा कि विश्व भर में जो शैक्षणिक बदलाव हो रहे हैं, उसी को दृष्टिगत रखते हुए हमारे यहां के मूल्यांकन और आकलन की पद्धति में परिवर्तन अवश्यंभावी हो जाता है। हमें हमारे शैक्षणिक स्तर में वे सभी बदलाव करने होंगे जोकि हमारे विद्यार्थियों को वैश्विक आवश्यकता के अनुरूप गढ़ सकें। भारत के उच्चतर संस्थानों को इस गलत धारणा को लोगों के मन से मिटाना ही होगा और इसके लिए जरूरी है कि हम विद्यार्थियों का सही तरीके से आकलन करें, ताकि वह सामाजिक, राजनीतिक, औद्योगिक, प्रशासनिक जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हों और वे समाज को सक्षम नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता रखते हों।

कुलपति आर.सी. कुहाड़।

प्रो. कुहाड़ कहते हैं कि मूल्यांकन की वर्तमान प्रणाली की कुछ सीमाएं हैं जिन्हें और परिष्कृत और नवीनीकृत करके समयानुकूल करने की आवश्यकता बहुत पहले से महसूस की जा रही है।

छात्रों के परीक्षण के प्राचीन तरीकों ने मूल्यांकन प्रणाली में सुधार की आवश्यकता को प्रासंगिक बना दिया है। हालांकि, मूल्यांकन को प्राथमिक रूप से अपनाए गए शिक्षण, अध्यापन और सीखने के तरीकों से जोड़ा जाना चाहिए और स्थिति के अनुकूल होना चाहिए। मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रो. आरसी कुहाड़ ने बताया कि अभी तक आकलन हमारी एक कमजोरी बनी हुई है, विशेष रूप से तीन मामलों में। सबसे पहले, वर्णनात्मक ज्ञान की स्मृति स्मरण पर बहुत अधिक जोर दिया जाता है। दूसरा, उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक कौशल का परीक्षण करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। तीसरा, अंकन की निष्पक्षता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए आंतरिक या बाहरी रूप से कोई मॉडरेशन नहीं है, इन तीनों स्तरों पर बदलाव करके इसे परिमार्जित किया जा सकता है। वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था द्वारा निरंतर परिवर्तन की तीव्र मांगों के बीच, भारत में उच्च शिक्षा क्षेत्र अपने परिवर्तन के चरण से गुजर रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था के त्वरित विकास की वर्तमान गति, कुछ क्षेत्रों, मुख्य रूप से सेवाओं में वृद्धि के साथ, परिवर्तन और विकास की गति और गति को बनाए रखने के लिए मानव संसाधनों की आवश्यकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

पश्चिमी देशों में अपनाई जाने वाली प्रणाली को पूरी दुनिया ने स्वीकार किया

प्रो. कुहाड़ ने बताया कि पश्चिमी देशों में, उच्च शिक्षा के अधिकांश विश्वविद्यालय और संस्थान पूरी तरह से आंतरिक मूल्यांकन विधियों पर छात्रों का मूल्यांकन कर रहे हैं, जो पहाते हैं उन्हें मूल्यांकन करना चाहिए, के सिद्धांत के आधार पर, पश्चिमी देशों में अपनाई जाने वाली प्रणाली को पूरी दुनिया ने स्वीकार किया है और उन देशों से आने वाले छात्रों को भारतीय विश्वविद्यालयों के उपाधि धारकों की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता है। कुलपति प्रो. कुहाड़ ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि कई मामलों में सत्रांत परीक्षा 3 घंटे के लिए होती है और यह छात्रों के भविष्य को तय करने का एकमात्र साधन है। वर्तमान परीक्षा प्रणाली स्मृति सीखने के कौशल का परीक्षण करती है। विद्यार्थी के सभी गुणों व कौशलों के आकलन करने की आवश्यकता है ताकि उपाधि प्राप्त विद्यार्थी कार्य सक्षम नागरिक भी बन सकें। इस प्रकार विश्वसनीयता और मूल्यांकन प्रणाली के परिणाम को सुनिश्चित करने के लिए सुधारों की बहुत आवश्यकता है। एक एकल परीक्षण के बजाय सतत मूल्यांकन की आवश्यकता है जो छात्रों के ज्ञान कौशल क्षमता और उनकी बुद्धि का यथार्थ आकलन कर सके।

शिक्षण, प्रशिक्षण और परीक्षण ऐसा हो कि उपाधि प्राप्त विद्यार्थी कार्य सक्षम नागरिक बन सकेः कुहाड़

महेंद्रगढ़,(जगमार्ग न्यूज)। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और भारतीय शैक्षिक तकनीकी परिषद का उद्देश्य उच्चतर संस्थानों में शैक्षणिक स्तर को गुणवत्तापूर्ण बनाना है, इसके लिए उन्होंने एक मार्ग दर्शिका बनायी है। इसी काम में उन्होंने आंकलन और मूल्यांकन की प्रक्रिया के लिए भी आमूलचूल परिवर्तन किया है, जोकि वर्तमान समय के संदर्भ में उपयुक्त प्रतीत होता है। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि विश्व भर में जो शैक्षणिक बदलाव हो रहे हैं, उसी

को दृष्टिगत रखते हुए हमारे यहां के मूल्यांकन और आंकलन की पद्धति में परिवर्तन अवश्यंभावी हो जाता है। हमें हमारे शैक्षणिक स्तर में वे सभी बदलाव करने होंगे जोकि हमारे विद्यार्थियों को वैश्विक आवश्यकता के अनुरूप गढ़ सकें। जिससे कि उनकी स्वीकारोक्ति विश्व स्तर पर और बढ़। आज भारत में अधिकांश लोगों की मान्यता यह है कि विदेश से पढ़ा व्यक्ति ही योग्य और अपने कार्य में दक्ष हो सकता है। भारत के उच्चतर संस्थानों को इस गलत धारणा को लोगों के मन से मिटाना ही होगा और इसके लिए जरूरी है कि हम विद्यार्थियों का सही तरीके से आँकलन करें, ताकि वह सामाजिक, राजनीतिक, औद्योगिक, प्रशासनिक जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हों और वे समाज को सक्षम नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता रखते हों।

वेबिनार

शिक्षण, प्रशिक्षण, परीक्षण ऐसा कि उपाधि प्राप्त विद्यार्थी कार्य सक्षम नागरिक बन सकें, कुलपति कुहाड़ बोले-

'हमें हमारे शैक्षणिक स्तर में सभी बदलाव करने होंगे'

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और भारतीय शैक्षिक तकनीकी परिषद का उद्देश्य उच्चतर संस्थानों में शैक्षणिक स्तर को गुणवत्तापूर्ण बनाना है, इसके लिए उन्होंने एक मार्गदर्शिका बनाई है। यह बात वेबिनार में कुलपति कुहाड़ ने कही। इसी क्रम में उन्होंने आंकलन और मूल्यांकन की प्रक्रिया के लिए भी परिवर्तन किया है, जोकि वर्तमान समय के संदर्भ में उपयुक्त प्रतीत होता है।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंविवि) के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि विश्व भर में जो शैक्षणिक बदलाव हो रहे हैं, उसी को दृष्टिगत रखते हुए विवि के मूल्यांकन और आंकलन की पद्धति में परिवर्तन जरूरी हो जाता है। हमें हमारे शैक्षणिक स्तर में वे सभी बदलाव करने होंगे जोकि हमारे विद्यार्थियों को वैश्विक आवश्यकता के अनुरूप गढ़ सकें। जिससे कि उनकी स्वीकारोक्ति विश्व स्तर पर और बढ़े।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंविवि)। (फाइल फोटो)

सामान्य बोलचाल की भाषा में आंकलन और मूल्यांकन में अंतर स्पष्ट नहीं हो पाता, परंतु जब उसे सूक्ष्मता से परखा जाता है, तो पता चलता है कि आंकलन को किसी चीज या किसी व्यक्ति के मूल्यांकन की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है, यानी गुणवत्ता, मूल्य या महत्व का आंकलन करने का कार्य। इसके विपरीत, मूल्यांकन किसी व्यक्ति या किसी चीज के मूल्यों, संख्याओं या प्रदर्शन के बारे में निर्णय लेने पर केंद्रित है। प्रो. कुहाड़ ने कहा कि मूल्यांकन की वर्तमान प्रणाली की कुछ सीमाएं हैं जिन्हें और परिष्कृत और नवीनीकृत करके समयानुकूल करने की आवश्यकता बहुत पहले से महसूस की जा रही है। छात्रों के परीक्षण के प्राचीन तरीकों ने मूल्यांकन प्रणाली में सुधार की आवश्यकता को प्रासंगिक बना दिया है। हालांकि, मूल्यांकन को प्राथमिक रूप से अपनाए गए शिक्षण, अध्यापन और सीखने के तरीकों से जोड़ा जाना चाहिए और स्थिति के अनुकूल होना चाहिए। मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है

कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि कई मामलों में परीक्षा तीन घंटे के लिए होती है और यह छात्रों के भविष्य को तय करने का एकमात्र साधन है। वर्तमान परीक्षा प्रणाली स्मृति सीखने के कौशल का परीक्षण करती है। विद्यार्थी के सभी गुणों, कौशलों के आंकलन करने की आवश्यकता है ताकि उपाधि प्राप्त विद्यार्थी कार्य सक्षम नागरिक भी बन सकें।

हकेवि में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत वेबिनार का आयोजन

भाषा नैतिक मूल्यों व सरोकारों को सुरक्षित रखने में सहयोगी

चार भाषाओं हरियाणवी, मलयालम, बांग्ला व उडिया की प्रस्तुतियों को प्रतिभागियों के समक्ष किया प्रस्तुत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

भाषा बहता नीर है जो बोली अपने को बहता नीर नहीं बनाएगी वह एक दिन खत्म हो जाएगी। ऐसी बोलियों का मूल स्वरूप और उनके भीतर का खजाना तभी बच सकता है जब हम सब उन्हें बचाने के लिए काम करेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने के संदर्भ में किया गया प्रावधान भाषा के इसी महत्व को स्पष्ट करता है। बोली वह माध्यम जो हमें समाज, नैतिक मूल्यों व सरोकारों को सुरक्षित रखने में सहयोग प्रदान करती है। यह हमें हमारी संस्कृति व हमारे पुरातन ज्ञान से जोड़ने का कार्य करती है। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने बुधवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित वेबिनार में व्यक्त किए। इस राष्ट्रीय वेबिनार को पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के प्रो. अक्षय कुमार व कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र के प्रो. सुभाष चंद्र ने विशेषज्ञ वक्ता के रूप में सम्बोधित किया। इस राष्ट्रीय वेबिनार में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने आयोजन के विषय में विस्तार से जानकारी दी और अतुल्य भारत में विचारों के प्रचार-प्रसार हेतु भाषा व बोली के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इससे पूर्व में प्रो. अक्षय कुमार ने भाषा के रूप में अंग्रेजी के माध्यम से बोलियों के प्रचार-प्रसार व महत्त्व पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि अक्सर अंग्रेजी को अंग्रेजों से जोड़कर देखा जाता है, जबकि वस्तु स्थिति एकदम विपरीत है। भाषा व ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु अंग्रेजी ने समूचे विश्व के स्तर पर साहित्य का विस्तृत स्वरूप उपलब्ध कराया है और उस साहित्य के अनुवाद के माध्यम से ज्ञान का प्रचार-प्रसार निरंतर जारी है। इस आयोजन में विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विद्यार्थियों व प्रतिभागियों के द्वारा उपलब्ध कराई गई कृतियों में से चार भाषाओं हरियाणवी, मलयालम, बांग्ला व उडिया की प्रस्तुतियों को भी प्रतिभागियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का सफलतम संचालन अंग्रेजी व विदेशी भाषा विभाग की सहायक आचार्य डा. रीनू और धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभाग के प्रभारी डा. अमित कुमार ने दिया। आयोजन में आयोजन समिति के सदस्यों के रूप में डा. सुदीप कुमार, डा. सिद्धार्थ शंकर रायद्व डा. विरेंद्र सिंह, अलेख एस नायक ने भी सक्रिय भूमिका निभाई। वेबिनार में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, विद्यार्थी, शोधार्थी व शिक्षणेतर कर्मचारी शामिल हुए।

महेंद्रगढ़। हकेंवि में वेबिनार को संबोधित करते कुलपति। फोटो : हरिभूमि

वेबिनार | हकेंविवि में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित हुआ वेबिनार

'मेरा अभिमान मेरी बोली' विषय पर रखे विचार

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंविवि), महेंद्रगढ़ में बुधवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत वेबिनार आयोजित किया गया।

वेबिनार को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने अपने संबोधन में कहा कि भाषा बहता नीर है, जो बोली अपने को बहता नीर नहीं बनाएगी, वह एक दिन खत्म हो जाएगी। ऐसी बोलियों का मूल स्वरूप और उनके भीतर का खजाना तभी बच सकता है, जब हम सब उन्हें बचाने के लिए काम करेंगे। स्वरूप से लेकर उनके साहित्य को नए-नए माध्यमों से सबके सामने लाएंगे। बोली निश्चित रूप से ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रथम सेतु है। इस सेतु के बिना हम अपनी यात्रा को पूरा कर भी नहीं सकते। मेरी बोली मेरा अभिमान तभी है, जब उस बोली को हम भूलें नहीं। उसमें काम करते हुए हम शर्माएं नहीं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने के संदर्भ में किया गया प्रावधान भाषा के इसी महत्त्व को स्पष्ट करता है। बोली वह माध्यम जो हमें समाज, नैतिक मूल्यों व सरोकारों को सुरक्षित रखने में सहयोग प्रदान करती है। यह हमें हमारी संस्कृति व हमारे पुरातन ज्ञान से जोड़ने का कार्य करती है।

इस राष्ट्रीय वेबिनार को पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के प्रो. अक्षय कुमार, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के प्रो. सुभाष चंद्र ने विशेषज्ञ वक्ता के रूप में संबोधित किया। विश्वविद्यालय की मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान पीठ के अधिष्ठाता प्रो. संजीव कुमार ने कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग, अंग्रेजी, विदेशी भाषा विभाग की ओर से मेरा अभिमानः मेरी बोली विषय पर आयोजित इस राष्ट्रीय वेबिनार में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के विषय में विस्तार से जानकारी दी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने आजादी का अर्थ बताते हुए कहा कि आ से अभिप्राय आत्म गौरव की भावना है, जा से अभिप्राय जीवंतता का अहसास और दा से अभिप्राय दायित्व बोध है। शेष अंत में ई का संबंध ईश्वर के प्रति अनुराग है।

इससे पूर्व में प्रो. अक्षय कुमार ने भाषा के रूप में अंग्रेजी के माध्यम से बोलियों के प्रचार-प्रसार व महत्त्व पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि अक्सर अंग्रेजी को अंग्रेजों से जोड़कर देखा जाता है जबकि वस्तु स्थिति एकदम विपरीत है। भाषा, ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु अंग्रेजी ने समूचे विश्व के स्तर पर साहित्य का विस्तृत स्वरूप उपलब्ध कराया है और उस साहित्य के अनुवाद के माध्यम से ज्ञान का प्रचार-प्रसार निरंतर जारी है। प्रो. सुभाष चंद्र ने भाषा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए रविंद्र नाथ टैगोर का उदाहरण दिया और उनके द्वारा बंगला भाषा से प्रेम से संबंधित विभिन्न प्रसंगों का उल्लेख किया। इस आयोजन में विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विद्यार्थियों, प्रतिभागियों के द्वारा उपलब्ध कराई गई कृतियों में से चार भाषाओं हरियाणवी, मलयालम, बांग्ला, उडिया की प्रस्तुतियों को भी प्रतिभागियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का सफलतम संचालन अंग्रेजी, विदेशी भाषा विभाग की सहायक आचार्य डॉ. रीनू और धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभाग के प्रभारी डॉ. अमित कुमार ने दिया। आयोजन में आयोजन समिति के सदस्यों के रूप में डॉ. सुदीप कुमार, डॉ. सिद्धार्थ शंकर राय, डॉ. विरेंद्र सिंह, श्री अलेख एस. नायक ने भी सक्रिय भूमिका निभाई। वेबिनार में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षणेतर कर्मचारी शामिल हुए।

web : www.rashtriyakhabar.com
epaper.rashtriyakhabar.com
राष्ट्रीय खबर हमारी नजर
हरियाणा

रक्त को प्रयोगशालाओं में बनाया नहीं जा सकता, आपूर्ति बनाये रखने के लिए रक्तदान आवश्यक : प्रो. आरसी कुहाड़

राष्ट्रीय खबर ब्यूरो

चंडीगढ़। 14 जून विश्व रक्तदाता दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने सभी रक्तदाताओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि रक्तदान को महादान कहा गया है, रक्त को प्रयोगशालाओं में बनाया नहीं जा सकता। जरूरतमंदों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रक्तदाताओं की निरंतर आवश्यकता बनी ही रहती है। यह हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है कि मानवता की रक्षा के लिए हम सभी को रक्तदान के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए और दूसरे लोगों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। आपने यदि कभी जीवन में रक्तदान किया है तो आपको भगवान को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने आपको ऐसा करने के लिए मौका और क्षमता दोनों प्रदान किए हैं।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय अपने यहां प्रत्येक वर्ष रक्तदान के शिविर का आयोजन करता आया है, उसी परंपरा का निर्वहन करते हुए विश्वविद्यालय के यूथ रेड क्रॉस और राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवक सेवाभाव के साथ इस बार भी रक्तदान कर जरूरतमंदों की जान बचाने के लिए आगे बढ़कर पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव से कार्य कर रहे हैं।

बहुत सी ऐसी गंभीर बीमारियाँ हैं जैसे विभिन्न प्रकार के कैंसर थैलेसीमिया, हिमोफिलिया आदि जिनमें रक्त की निरंतर आवश्यकता रहती है, ऐसे में इन रक्त महादानियों ने लगातार रक्त की आपूर्ति बनाए रखी।

कुलपति प्रो. कुहाड़ ने कहा कि जीवन को स्वस्थ रखने के लिये योग और ध्यान तथा समाज सेवा के लिये रक्तदान मुख में हो राम नाम, जीवन में हो रक्तदान। उनका कहना है कि रक्तदान सिर्फ दूसरों के लिए ही नहीं बल्कि खुद के लिए भी स्वास्थ्य भी महत्वपूर्ण है।

शोध के अनुसार, नियमित रूप से रक्तदान करने से कैंसर विकसित होने, दिल का दौरा पड़ने या कई अन्य बीमारियों से प्रभावित होने के जोखिम को कम करने में मदद मिलती है। स्वयंसेवक राजन ने जस्ट फॉर हेल्प नाम से सोशल टीम बनाकर कोरोना महामारी के दौरान रक्तवीरों को तैयार कर डेढ़ सौ से अधिक जरूरतमंदों के लिए रक्तदान करवाया है। इस तरह उसने यूथ रेड क्रास इकाई के स्वयंसेवकों की मदद से 450 से अधिक जरूरतमंद लोगों को रक्त मुहैया कराने का काम किया। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया के प्रयोग से उसने लोगों से प्लाज्मा डोनेट करवा मदद की। वह स्वयं भी अब तक 14 बार रक्तदान कर चुका है जोकि अपने आप में एक मिसाल है। इस अभूतपूर्व कार्य के लिए हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के यूथ रेड क्रॉस के स्वयंसेवक और संयोजक बधाई के पात्र हैं।

विश्व रक्तदान दिवस के अवसर पर कोविड-19 कोरोना महामारी के इस दौर में विश्व रक्तदान दिवस की अहमियत और बढ़ जाती है, जबकि उसकी थीम रक्त दान करें ताकि दुनिया का हृदय धड़कता रहे है।

रक्त को प्रयोगशालाओं में बनाया नहीं जा सकता : प्रो. कुहाड़

जगमार्ग न्यूज

महेंद्रगढ़। 14 जून विश्व रक्तदाता दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने सभी रक्तदाताओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि रक्तदान को महादान कहा गया है, रक्त को प्रयोगशालाओं में बनाया नहीं जा सकता। जरूरतमंदों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रक्तदाताओं की निरंतर आवश्यकता बनी ही रहती है। यह हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है कि मानवता की रक्षा के लिए हम सभी को रक्तदान के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए और दूसरे लोगों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। आपने यदि कभी जीवन में रक्तदान किया है तो आपको भगवान को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने आपको ऐसा करने के लिए मौका और क्षमता दोनों प्रदान किए हैं। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय अपने यहां प्रत्येक वर्ष रक्तदान के शिविर का आयोजन करता आया है, उसी परंपरा का निर्वहन करते हुए विश्वविद्यालय के यूथ रेड क्रॉस और राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवक सेवाभाव के साथ इस बार भी रक्तदान कर जरूरतमंदो की जान बचाने के लिए आगे बढ़कर पूर्ण निष्ठ एवं समर्पण भाव से कार्य कर रहे हैं।

महेंद्रगढ़। हकेंविवि महेंद्रगढ़।

रक्त आपूर्ति बनाए रखने को रक्तदान आवश्यक

महेंद्रगढ़। 14 जून विश्व रक्तदाता दिवस के रूप में मनाया जाता है। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने सभी रक्तदाताओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि रक्तदान को महादान कहा है। रक्त को प्रयोगशालाओं में बनाया नहीं जा सकता। जरूरतमंदों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रक्तदाताओं की निरंतर आवश्यकता बनी ही रहती है। यह हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है कि मानवता की रक्षा के लिए हम सभी को रक्तदान के लिए सदैव

योग दिव्य गुणों की प्राप्ति का माध्यम

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ अपने स्थापना के समय से ही शिक्षार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों, शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों और प्रशासन से जुड़े सभी अधिकारियों के समग्र विकास के लिए प्रयासरत रहा है। कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ आगामी सप्तम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2021 के बारे में चर्चा करते हुए यह उद्गार व्यक्त किये। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के योग विभाग ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों के बच्चों के लिए पांच दिवसीय योग का कार्यक्रम रखा, जिसमें बच्चों और उनके अभिभावकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और योग के विभिन्न आयामों को सीखा और उसे अपने जीवन में उतारने का संकल्प लिया। यह कार्यक्रम विभाग के शिक्षकों डॉ. रवि कुमार और डॉ. अजय पाल, शिक्षक प्रभारी व शोधार्थी नीरज और अनुज कुमारी के सहयोग और विभागाध्यक्षा प्रो. नीलम सांगवान व संयोजक प्रो. रविन्द्र पाल अहलावत के देखरेख में संपन्न हुआ। कुलपति ने विभाग को इस नेक कार्य के लिए बधाई दी व भविष्य में समाज हित में कार्य करने के लिए निर्देशित भी किया। इससे पहले योग विभाग के द्वारा योग के सैद्धांतिक पक्षों को जन-सामान्य को परिचित कराने व शिक्षार्थियों, शोधार्थियों के लिए योग व्याख्यान की जो श्रृंखला प्रत्येक महीने चल रही है, उसी में इस बार डॉ. लारा शर्मा जी, सहायक आचार्य, स्वामी दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान के द्वारा एक सारगर्भित व्याख्यान दिया गया। जिसमें उन्होंने योग की दृष्टि दिशा व दृष्टिकोण पर अपने विचार रखे, उन्होंने बताया परिस्थितियों के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलने से व्यक्ति किसी भी स्थिति में अपने

प्रो. आर. सी. कुहाड़

योगासन

पांच दिवसीय योग कार्यक्रम का किया आयोजन

हम सब एक साथ एक जैसा योग का अभ्यास लय के साथ कर सकें

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में शिक्षकों व कर्मियों के बच्चों के लिए हुआ योग कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के योग विभाग ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों के बच्चों के लिए पांच दिवसीय योग का कार्यक्रम रखा। जिसमें बच्चों व उनके अभिभावकों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया तथा योग के विभिन्न आयामों को सीखा और उसे अपने जीवन में उतारने का संकल्प लिया। यह कार्यक्रम विभाग के शिक्षक डा. रवि कुमार व डा. अजय पाल, शिक्षक प्रभारी व शोधार्थी नीरज व अनुज कुमारी के सहयोग तथा विभागाध्यक्षा प्रो. नीलम सांगवान व संयोजक प्रो. रविन्द्र पाल अहलावत के देखरेख में संपन्न हुआ। इससे पहले योग विभाग के द्वारा योग के सैद्धांतिक पक्षों को जन-सामान्य को परिचित कराने व शिक्षार्थियों, शोधार्थियों के लिए योग व्याख्यान की जो श्रंखला प्रत्येक महीने चल रही है, उसी में इस बार डा. लारा शर्मा सहायक आचार्य स्वामी दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर, राजस्थान के द्वारा एक सारगर्भित व्याख्यान दिया गया। जिसमें उन्होंने योग की दृष्टि दिशा व दृष्टिकोण पर अपने विचार रखे, उन्होंने बताया परिस्थितियों के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलने से व्यक्ति किसी भी स्थिति में अपने को प्रसन्न रख सकता है।

महेंद्रगढ़। कार्यक्रम में आनलाइन भाग लेते हुए। फोटो : हरिभूमि

सुबह छह से सात बजे तक योग : योग विभाग के शिक्षक प्रभारी डॉ. अजय पाल ने जानकारी दी है कि आगामी 21 जून को पूरा विश्व सातवां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाएगा, उसी के उपलक्ष्य में 18 और 19 जून को योग के सैद्धांतिक पक्षों को और स्पष्ट करने के लिए दो दिन का वेबिनार रखा गया है। जिसमें देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के निष्णात आचार्य योग के सैद्धांतिक पक्षों की विस्तृत विवेचना करेंगे। 21 जून को सुबह सैद्धांतिक और प्रयोगात्मक दोनों पक्षों का समावेश किया जाएगा और इसमें विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों के भाग लेने की संभावना है।

सुख, स्वास्थ्य व संतोष योग से संभव : कुहाड़

जागरण संवाददाता, नारनौल : आगामी सप्तम अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2021 के बारे में चर्चा करते हुए कुलपति प्रो. आर सी कुहाड़ ने हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ स्थापना के समय से ही शिक्षार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों, शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों और प्रशासन से जुड़े सभी अधिकारियों के समग्र विकास के लिए प्रयासरत रहा है। इस मौके पर उन्होंने कहा कि योग हमारे जीवन में सुख, प्रसन्नता, स्वास्थ्य और संतोष जैसे दिव्य गुणों का समावेश करने में सक्षम है। इसलिए ऐसे प्रयोग हर व्यक्ति को करते रहना चाहिए जिससे कि वह अपने स्वास्थ्य को बनाए रख सके और जीवन के चरम पुरुषार्थ की ओर अग्रसर हो सके। इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के योग विभाग ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों के बच्चों के लिए पांच दिवसीय योग का कार्यक्रम रखा। जिसमें बच्चों और उनके अभिभावकों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और योग के विभिन्न आयामों को सीखा। शिक्षक डॉ. रवि कुमार और डॉ. अजय पाल, शिक्षक प्रभारी व शोधार्थी नीरज और अनुज कुमारी के सहयोग और विभागाध्यक्षा प्रो. नीलम सांगवान व संयोजक प्रो. रविन्द्र पाल अहलावत के देखरेख में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। कुलपति ने विभाग को इस नेक कार्य के लिए बधाई दी व भविष्य में समाज हित में कार्य करने के लिए निर्देशित भी किया। इससे पहले योग विभाग के द्वारा योग के सैद्धांतिक पक्षों को जन-सामान्य को परिचित कराने पर डॉ. लारा शर्मा जी, सहायक आचार्य, स्वामी दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान के द्वारा एक सारगर्भित व्याख्यान दिया गया। योग विभाग के शिक्षक प्रभारी डा. अजय पाल ने जानकारी दी है कि आगामी 21 जून को पूरा विश्व सातवां अंतरर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाएगा, उसी के उपलक्ष्य में 18 और 19 जून को योग के सैद्धांतिक पक्षों को और स्पष्ट करने के लिए, कुलपति कुलपति प्रो. आर सी कुहाड़ के संरक्षण और विभागाध्यक्षा प्रो. नीलम सांगवान के निर्देशन में, दो दिन का वेबिनार रखा गया है। जिसमें विश्वविद्यालयों के निष्णात आचार्य योग के सैद्धांतिक पक्षों की विस्तृत विवेचना करेंगे।

प्रो. आरसी कुहाड़

स्वास्थ्य और संतोष जैसे दिव्य गुणों का समावेश करने में सक्षम है योग : वीसी

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विवि के योग विभाग की ओर से शिक्षकों एवं कर्मचारियों के बच्चों के लिए 5 दिवसीय योग कार्यक्रम की शुरुआत की गई, जिसमें बच्चों और उनके अभिभावकों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस दौरान कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने आगामी सप्तम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के बारे में चर्चा की।

यह कार्यक्रम विभाग के शिक्षकों डॉ. रवि कुमार और डॉ. अजय पाल, शिक्षक प्रभारी व शोधार्थी नीरज और अनुज कुमारी के सहयोग और विभागाध्यक्ष प्रो. नीलम सांगवान व संयोजक प्रो. रविन्द्र पाल अहलावत के देखरेख में हुआ। इससे पहले योग विभाग के द्वारा योग के सैद्धांतिक पक्षों को जन-सामान्य को परिचित कराने व शिक्षार्थियों, शोधार्थियों के लिए योग व्याख्यान की जो श्रंखला प्रत्येक महीने चल रही है, उसी में इस बार डॉ. लारा शर्मा, सहायक आचार्य, स्वामी दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान के द्वारा एक सारगर्भित व्याख्यान दिया गया। डॉ. अजय पाल ने बताया कि 21 जून को पूरा विश्व 7वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाएगा, उसी के उपलक्ष्य में 18 और 19 जून को योग के सैद्धांतिक पक्षों को और स्पष्ट करने के लिए, कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ के संरक्षण और विभागाध्यक्ष प्रो. नीलम सांगवान के निर्देशन में, दो दिन का वेबिनार रखा गया है। 21 जून की सुबह सैद्धांतिक और प्रयोगात्मक दोनों पक्षों का समावेश किया जाएगा।

कोरोना काल में निरंतर सेवा के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

- कोरोनाकाल में केंद्रीय विवि के छात्र सेवा भाव से काम कर रहे

कोरोना महामारी की विकट परिस्थिति में जब लोग उम्मीद खोने लगे थे, हर परिस्थिति में सेवाकार्य के लिए तत्पर रहने वाले हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई के स्वयंसेवक उस समय भी सेवाभाव के साथ जरूरतमंद लोगों की जिंदगी बचाने के लिए आगे बढ़कर सेवाकार्य करते रहे। हकेवि के स्वयंसेवक निःस्वार्थ भाव से दिन-रात जरूरतमंद लोगों के लिए लगभग सभी राज्यों में अपनी नैतिक जिम्मेदारी निभाते हुए सेवाकार्य कर रहे हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने स्वयंसेवक राजन कुमार के साथ-साथ विश्वविद्यालय के अन्य सभी स्वयंसेवकों के सेवा कार्यों की प्रशंसा करते कोरोना से जंग जीतने तक इस सेवा कार्य को निरंतर जारी रखने के लिए प्रेरित किया। हकेवि के पर्यटन एवं खानपान प्रौद्योगिकी विभाग से परास्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुके व राष्ट्रीय सेवा योजना एवं यूथ रेड क्रॉस इकाई में सदैव तत्पर रहने वाले स्वयंसेवक राजन कुमार ने कोरोना में भी सैकड़ों लोगों की जिंदगी को रक्तदान के माध्यम से बचाया है। डॉ. दिनेश ने बताया कि राजन ने जस्ट फॉर हेल्प नाम से सोशल टीम बनाकर कोरोना के दौरान रक्तवीरों को तैयार कर डेढ़ सौ से अधिक जरूरतमंदों के लिए रक्तदान करवाया है।

कोरोना महामारी में भी सेवाभाव से कार्य कर रहे हैं स्वयंसेवकः प्रो.आरसी कुहाड़

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। कोरोना महामारी की विकट परिस्थिति में जब लोग उम्मीद खोने लगे थे, तब हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय(हकेविवि) के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवक सेवाभाव के साथ जरूरतमंदों की जिंदगी बचाने के लिए कार्य करते रहे। स्वयंसेवक निःस्वार्थ भाव से दिन-रात जरूरतमंदों के लिए अपनी नैतिक जिम्मेदारी निभाते हुए सेवा कार्य कर रहे हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने स्वयंसेवक राजन कुमार के साथ-साथ विश्वविद्यालय के अन्य स्वयंसेवकों के सेवा कार्यों की प्रशंसा करते हुए कोरोना महामारी से जंग जीतने तक कार्य को निरंतर जारी रखने के लिए प्रेरित किया।

हकेविवि के पर्यटन एवं खानपान प्रौद्योगिकी विभाग से परास्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुके राष्ट्रीय सेवा योजना एवं यूथ रेडक्रॉस इकाई में तत्पर रहने वाले स्वयंसेवक राजन कुमार ने कोरोना महामारी में भी कई लोगों की जिंदगी को रक्तदान के माध्यम से बचाया है। राजन ने बताया कि उसे सेवाभाव की प्रेरणा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ से मिली। एनएसएस इकाई के संयोजक डॉ. दिनेश चहल ने बताया कि राजन ने जस्ट फॉर हेल्प नाम से सोशल टीम बनाकर कोरोना महामारी के दौरान रक्तवीरों को तैयार कर 150 से अधिक जरूरतमंदों के लिए रक्तदान करवाया है। इस तरह एनएसएस और यूथ रेडक्रॉस इकाई के स्वयंसेवकों की मदद से 450 से अधिक जरूरतमंद लोगों को रक्त मुहैया कराने का काम किया। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया के प्रयोग से उसने लोगों से प्लाज्मा डोनेट करवाकर मदद की। वह स्वयं भी अब तक 14 बार रक्तदान कर चुके हैं। इस कार्य के लिए उन्हें कई राज्यों में विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका है। राजन ने मरणोपरांत पूर्ण अंगदान करने का संकल्प पत्र भरा है। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्वयंसेवकों ने डॉ. दिनेश चहल के मार्गदर्शन में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण की शपथ भी ली।

'समाज की पथ प्रदर्शक है मीडिया'

आजादी के 75 वर्ष और मीडिया पर विशेषज्ञों के विचार, मनुष्य सूचना के बिना कुछ नहीं

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़ : मीडिया हर किसी के जीवन का हिस्सा है। यह केवल मीडिया ही है, जिसके माध्यम से हम अधिक और व्यापक रूप से संवाद कर सकते हैं और एक-दूसरे जुड़ सकते हैं। चाहे हम संचार माध्यमों की बात करें या जनसंचार माध्यमों की, मनुष्य सूचना के बिना कुछ भी नहीं है। मीडिया ही है जो हमें सभी आवश्यक सावधानियों और प्रक्रियाओं के साथ जानकारी प्रदान करता है।

कोरोना महामारी के समय में भी मीडियाकर्मियों ने महामारी की स्थिति से लड़ने के लिए सभी सावधानी, सूचना, रोकथाम और आवश्यक चीजों के बारे में हमें अद्यतन रखने के लिए अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं के रूप में काम किया है। वह अभिनंदन के योग्य है। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने शुक्रवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित वेबिनार में अपने संदेश के माध्यम से व्यक्त किए। इस राष्ट्रीय वेबिनार में भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय

प्रो. आरसी कुहाड़ ● जागरण

हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रो. अनिल के. राय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के सेंटर फोर मास कम्युनिकेशन के पूर्व अध्यक्ष प्रो.संजीव भानावत, व हरियाणा के उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के मीडिया सलाहकार सतीश बेनिवाल विशेषज्ञ वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय की मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान पीठ के अधिष्ठाता प्रो. संजीव कुमार ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से आयोजित इस राष्ट्रीय वेबिनार में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने कुलपति का संदेश प्रस्तुत किया। कुलपति ने अपने संदेश में कहा कि मीडिया ने हमेशा से समाज व आमजन के उत्थान के लिए कार्य किया है। उन्होंने कहा कि आज मिथ्या समाचारों और गलत सूचनाओं से भरी आभासी दुनिया के समय में मीडिया की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। प्रो. कुहाड़ ने पत्रकारिता के सिरमौर लाला लाजपत राय, महामना मदनमोहन मालवीय, विपिनचंद्र पाल, गणेश शंकर विद्यार्थी, बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्र पाल सरीखे आजादी के दीवानों की पत्रकारिता को स्मरण रखने आ आह्वान किया, जिन्होंने अपना आदर्श और विचार राष्ट्र के हित में ही रखा। बाल गंगाधर तिलक ने जब मराठी भाषा में 'केसरी' और अंग्रेजी भाषा में 'मराठा' नामक पत्रों का प्रकाशन प्रारंभ किया तो उन्होंने राष्ट्रीय व सामाजिक सरोकारों को आगे रखा। प्रो. संजय द्विवेदी ने नए भारत के निर्माण में मीडिया की भूमिका विषय पर प्रतिभागियों को संबोधित किया। प्रो. द्विवेदी ने कहा कि पत्रकारिता की बात तो होती है, लेकिन हम भारतीय पत्रकारिता के नायकों को ही भुलाते जा रहे हैं जोकि उचित नहीं है। उन्होंने अपने संस्थान में इस दिशा जारी प्रयासों के अंतर्गत पुस्तकालय को हिंदी पत्रकारिता के जनक जुगल किशोर का नाम दिए जाने का उल्लेख किया। प्रो. अनिल के राय अपने संबोधन में आजादी से पूर्व और आजादी के बाद पत्रकारिता के बदले स्वरूप पर प्रकाश डाला। प्रो. राय ने कहा कि पत्रकारिता का श्वेत पक्ष है तो श्याम भी, यह अच्छी है तो बुरी भी और पत्रकारों का पहला धर्म है कि वह उसकी रक्षा करें और उसे बचाने के लिए प्रयास करें उसके सम्मान की रक्षा करें।

प्रो. भानावत ने अपने संबोधन में भारतेन्दु का उल्लेख करते हुए आजादी की लड़ाई में पत्रकारिता के योगदान की चर्चा की। उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के मीडिया सलाहकार सतीश बेनिवाल ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का कार्यक्रम का सफलतम संचालन विभाग की सहायक आचार्य डा. भारती बत्रा ने किया और धन्यवाद ज्ञापन विभाग के प्रभारी आलेख एस नायक ने दिया। आयोजन में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, विद्यार्थी, शोधार्थी व शिक्षणेत्तर कर्मचारी शामिल हुए।

समाज की पथ प्रदर्शक है मीडिया : प्रो. आर.सी. कुहाड़

महेंद्रगढ़|कोरोना काल में मीडियाकर्मियों ने सूचना, रोकथाम और आवश्यक चीजों के बारे में हमें जागरूक रखने के लिए अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं के रूप में काम किया है। वह अभिनंदन के योग्य है। यह विचार हकेंवि के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने शुक्रवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित वेबिनार में व्यक्त किए। वेबिनार में भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विवि वर्धा के प्रो. अनिल के. राय, राजस्थान विवि के सेंटर फॉर मास कम्युनिकेशन के पूर्व अध्यक्ष प्रो. संजीव भानावत, व उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के मीडिया सलाहकार सतीश बेनिवाल विशेषज्ञ वक्ता के रूप में रहे। प्रो. संजय द्विवेदी ने नए भारत के निर्माण में मीडिया की भूमिका संबोधित किया। प्रो. अनिल के राय ने कहा पत्रकारिता पहले मिशन थी, फिर प्रोफेशन बनी, फिर संसेशन और अब जाने क्या-क्या नए रूप देखने को मिल रहे हैं। प्रो. संजीव भानावत ने कहा वर्तमान की पत्रकारिता और उसके समक्ष उपलब्ध चुनौतियों का उल्लेख किया और कहा हम सही सूचनाओं व निष्पक्ष पत्रकारिता के लिए आवश्यक कीमत का भुगतान करने के लिए तैयार तभी हमें निष्पक्ष, समाज हितैषी व राष्ट्र को समर्पित पत्रकारिता का लाभ मिल सकेगा।

अभियान हकेंविवि में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित हुआ वेबिनार

समाज की पथ प्रदर्शक है मीडिया : प्रो. आरसी कुहाड़

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंविवि) महेंद्रगढ़ में शुक्रवार का आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत वेबिनार आयोजित किया गया।

कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने वेबिनार को संबोधित करते हुए कहा कि मीडिया हर किसी के जीवन का हिस्सा है। यह केवल मीडिया ही है, जिसके माध्यम से हम अधिक और व्यापक रूप से संवाद कर सकते हैं और एक-दूसरे जुड़ सकते हैं। चाहे हम संचार माध्यमों की बात करें या जनसंचार माध्यमों की, मनुष्य सूचना के बिना कुछ भी नहीं है। मीडिया ही है जो हमें सभी आवश्यक सावधानियों और प्रक्रियाओं के साथ जानकारी प्रदान करता है। कोरोना महामारी के समय में भी मीडिया कर्मियों ने महामारी की स्थिति से लड़ने के लिए सभी सावधानी, सूचना, रोकथाम और आवश्यक चीजों के बारे में अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं के रूप में काम किया है। वह अभिनंदन के योग्य है। इस राष्ट्रीय वेबिनार में भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रो. अनिल के. राय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के सेंटर फोर मास कम्युनिकेशन के पूर्व अध्यक्ष प्रो.संजीव भानावत, हरियाणा के उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के मीडिया सलाहकार सतीश बेनिवाल विशेषज्ञ वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय की मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान पीठ के अधिष्ठाता प्रो. संजीव कुमार ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से आयोजित इस राष्ट्रीय वेबिनार में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने कुलपति का संदेश प्रस्तुत किया। कुलपति ने अपने संदेश में कहा कि मीडिया ने हमेशा से समाज, आमजन के उत्थान के लिए कार्य

वेबिनार को संबोधित करते विशेषज्ञ। *संवाद*

किया है। इसे लोकतंत्र का चौथे स्तंभ कहा जाता है। प्रो. कुहाड़ ने पत्रकारिता के सिरमौर लाला लाजपत राय, महामना मदनमोहन मालवीय, विपिनचंद्र पाल, गणेश शंकर विद्यार्थी, बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्र पाल सरीखे आजादी के दीवानों की पत्रकारिता को स्मरण रखने का आह्वान किया।

भारतीय पत्रकारिता के नायकों को भूलाना उचित नहीं : भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने नए भारत के निर्माण में मीडिया की भूमिका विषय पर प्रतिभागियों को संबोधित किया। प्रो. दिवेदी ने कहा कि पत्रकारिता की बात तो होती है लेकिन हम भारतीय पत्रकारिता के नायकों को ही भुलाते जा रहे हैं जोकि उचित नहीं है। प्रो. अनिल के राय अपने संबोधन में आजादी से पूर्व और आजादी के बाद पत्रकारिता के बदले स्वरूप पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता पहले मिशन थी, फिर प्रोफेशन बनी, फिर संसेशन और अब जाने क्या-क्या नए रूप देखने को मिल रहे हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के सेंटर फोर मास कम्युनिकेशन के पूर्व अध्यक्ष प्रो. संजीव भानावत ने अपने संबोधन में बेहद विस्तार से आजादी से पूर्व और आजादी से बाद पत्रकारिता के क्षेत्र में आए बदलावों पर बात की। उन्होंने अपने संबोधन में हिंदी का पहला समाचार पत्र निकालने वाले जुगल किशोर के प्रयासों और जेम्स हिक्की के समक्ष आई समस्याओं का भी उल्लेख किया। प्रो. भानावत ने विश्वविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के आयोजन के लिए कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ की भी प्रशंसा की। हरियाणा के उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के मीडिया सलाहकार सतीश बेनिवाल ने भी संबोधित किया।

अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की अपार संभावनाएं : प्रो. कुहाड़

हकेवि में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित हुआ वेबिनार

महेंद्रगढ़, प्रवीण कुमार (पंजाब केसरी) : जिस प्रकार बढ़ती हुई जनसंख्या, औद्योगिकरण, पर्यावरण प्रदूषण, बायोमेडिकल अपशिष्ट, उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट ने एक विकट समस्या का रूप धारण कर लिया है। इसका मुख्य कारण है कि वर्तमान में उत्पन्न हो रहे अपशिष्ट का वैज्ञानिक पद्धति से निपटान नहीं हो रहा है। यह समस्या महानगरों में कूड़े के विशालकाय पहाड़ के रूप में देखी जा सकती है। इन अपशिष्टो का सही ढ़ंग से प्रबंधन न होने के कारण हमारे जीवनोपयोगी प्राकृतिक संसाधन भी प्रदूषित होते जा रहे हैं। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने यह विचार वीरवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित वेबिनार में अपने संदेश के माध्यम से व्यक्त किए। उन्होंने इस मौके पर उन्होंने विश्वविद्यालय में व्यावसायिक अध्ययन एवं कौशल विकास विभाग के अंतर्गत उपलब्ध औद्योगिक अपशिष्ट प्रबंधन पाठ्यक्रम पर चर्चा करते हुए बताया कि यह पाठ्यक्रम किस तरह से इस समस्या का निदान करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। वेबिनार में पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. विनोद कुमार गर्ग, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. आदित्य सक्सेना तथा जिंदल स्टेनलेस स्टील के वरिष्ठ प्रबंधक (पर्यावरण स्वास्थ्य व सुरक्षा) विजय कुमार विशेष वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के व्यावसायिक अध्ययन और कौशल विकास विभाग द्वारा आत्मनिर्भर भारत के लिए कौशल का प्रशिक्षण पर आधारित इस वेबिनार का शुभारम्भ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति प्रदर्शित करने वाली डाक्यूमेंट्री दिखाई गई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने अपने संदेश में कहा कि भारत सरकार के एक सर्वे के अनुसार भारत में प्रतिदिन लगभग 484 टन बायोमेडिकल अपशिष्ट उत्पन्न होता है।

अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की अपार संभावनाएं : प्रो. आरसी

जगमार्ग न्यूज

महेंद्रगढ़। जिस प्रकार बढ़ती हुई जनसंख्या, औद्योगिकरण, पर्यावरण प्रदूषण, बायोमेडिकल अपशिष्ट, उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट ने एक विकट समस्या का रूप धारण कर लिया है। इसका मुख्य कारण है कि वर्तमान में उत्पन्न हो रहे अपशिष्ट का वैज्ञानिक पद्धति से निपटान नहीं हो रहा है।

यह समस्या महानगरों में कूड़े के विशालकाय पहाड़ के रूप में देखी जा सकती है। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने यह विचार वीरवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित वेबिनार में अपने संदेश के माध्यम से व्यक्त किए। उन्होंने इस मौके पर उन्होंने विश्वविद्यालय में व्यावसायिक अध्ययन एवं कौशल विकास विभाग के अंतर्गत उपलब्ध औद्योगिक अपशिष्ट प्रबंधन पाठ्यक्रम पर चर्चा करते हुए बताया कि यह पाठ्यक्रम किस तरह से इस समस्या का निदान करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। वेबिनार में पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. विनोद कुमार गर्ग, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. आदित्य सक्सेना तथा जिंदल स्टेनलेस स्टील के वरिष्ठ प्रबंधक (पर्यावरण स्वास्थ्य व सुरक्षा) विजय कुमार विशेष वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के व्यावसायिक अध्ययन और कौशल विकास विभाग द्वारा आत्मनिर्भर भारत के लिए कौशल का प्रशिक्षण पर आधारित इस वेबिनार का शुभारम्भ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ।

हरिभूमि

रोहतक -महेन्द्रगढ़

11 Jun 2021

हकेंवि में वेबिनार का आयोजन

■ अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की अपार संभावनाएं : प्रो. कुहाड़

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। हकेंवि में आयोजित वेबिनार को संबोधित करते विशेषज्ञ।

बढ़ती हुई जनसंख्या, औद्योगिकरण, पर्यावरण, प्रदूषण, बायोमेडिकल अपशिष्ट उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट ने एक विकट समस्या का रूप धारण कर लिया है। इसका मुख्य कारण है कि वर्तमान में उत्पन्न हो रहे अपशिष्ट का वैज्ञानिक पद्धति से निपटान नहीं हो रहा है।

ये समस्या महानगरों में कूड़े के विशालकाय पहाड़ के रूप में देखी जा सकती है। इन अपशिष्टों का सही ढ़ंग से प्रबंधन न होने के कारण हमारे जीवनोपयोगी प्राकृतिक संसाधन भी प्रदूषित होते जा रहे हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने ये विचार वीरवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित वेबिनार में अपने संदेश के माध्यम से व्यक्त किए। उन्होंने विवि में व्यावसायिक अध्ययन एवं कौशल विकास विभाग के अंतर्गत उपलब्ध औद्योगिक अपशिष्ट प्रबंधन पाठ्यक्रम पर चर्चा करते हुए बताया कि यह पाठ्यक्रम किस तरह से इस समस्या का निदान करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

वेबिनार हकेंविवि में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित हुआ वेबिनार

अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की अपार संभावनाएं

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंविवि) में वीरवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत वेबिनार आयोजित किया गया।

कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने वेबिनार को संबोधित करते हुए कहा कि जिस प्रकार बढ़ती हुई जनसंख्या, औद्योगिकीरण, पर्यावरण प्रदूषण, बायोमेडिकल अपशिष्ट, उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट ने एक विकट समस्या का रूप धारण कर लिया है। इसका मुख्य कारण है कि वर्तमान में उत्पन्न हो रहे अपशिष्ट का वैज्ञानिक पद्धति से निपटान नहीं हो रहा है। उन्होंने विश्वविद्यालय में व्यावसायिक अध्ययन एवं कौशल विकास विभाग के अंतर्गत उपलब्ध औद्योगिक अपशिष्ट प्रबंधन पाठ्यक्रम पर चर्चा करते हुए बताया कि यह पाठ्यक्रम किस तरह से इस समस्या का निदान करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। वेबिनार में पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. विनोद कुमार गर्ग, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विवि के डॉ. आदित्य सक्सेना, जिंदल स्टेनलेस स्टील के वरिष्ठ प्रबंधक (पर्यावरण स्वास्थ्य व सुरक्षा) विजय कुमार विशेष वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय की प्रगति प्रदर्शित करने वाली डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। कुलपति कुहाड़ ने अपने संदेश में कहा कि भारत सरकार के एक सर्वे के अनुसार दएश में प्रतिदिन लगभग 484 टन बायोमेडिकल अपशिष्ट उत्पन्न होता है, जिसमें से 447 टन अपशिष्ट ही सही पद्धति से उपचारित होता है। कोरोना महामारी से उत्पन्न बायोमेडिकल अपशिष्ट ने इस समस्या को ओर अधिक बढ़ा दिया है। हर समस्या अपने साथ नया अवसर लेकर आती है। व्यक्ति सकारात्मक सोच के साथ वेस्ट से बेस्ट निकालकर भी आत्मनिर्भर बन सकता है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में औद्योगिक अपशिष्ट प्रबंधन पाठ्यक्रम सफलता पूर्वक संचालित कर रहा है और इस पाठ्यक्रम को करने वाले विद्यार्थियों ने न केवल देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में रोजगार प्राप्त किया है बल्कि स्वरोजगार को अपनाकर आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में सहयोग भी दे रहे हैं।

व्यावहारिक ज्ञान भी लें

जिंदल स्टील के विजय सिंह ने व्याख्यान में घरेलू कचरे से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से प्रतिभागियों को अवगत कराया और बताया कि कचरे के प्रबंधन को लेकर यदि हम जागरूक हो जाए तो न केवल इस समस्या से निजात पाई जा सकती है बल्कि यह धनोपार्जन का माध्यम भी बन सकता है। डॉ. पवन कुमार मौर्य ने बताया कि विश्वविद्यालय में संचालित बीवॉक औद्योगिक अपशिष्ट प्रबंधन पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु विभिन्न संस्थानों में भेजा जाता है। इस आयोजन में डॉ. अनूप यादव, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. मनीष कुमार, डॉ. सरन प्रसाद ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

सकारात्मक सोच रखें

पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. विनोद कुमार गर्ग ने अपने विशेषज्ञ व्याख्यान में बताया कि अपशिष्ट प्रबंधन आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है। बढ़ती हुई जनसंख्या से कचरा बढ़ रहा है और कचरा डालने की जगह कम होती जा रही है। प्रो. गर्ग ने अपने व्याख्यान में अनेक उदाहरणों के माध्यम से बताया कि प्रत्येक चीज में अवसर उपलब्ध है। यदि व्यक्ति अपनी सोच सकारात्मक रखे और अपने आंख, कान खुले रखे तो समस्या को अवसर में बदला जा सकता है। विशेष वक्ता डॉ. आदित्य सक्सेना ने व्यावसायिक शिक्षा की पुनर्कल्पना पर बोलते व्यावसायिक एवं कौशल विकास कार्यक्रमों के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

TALK ON BIOMEDICAL SCIENCE

Mahendragarh: The department of vocational studies and skill development at the Central University of Haryana (CUH) organised a webinar over 'Biomedical science'. Vice-Chancellor Prof RC Kuhad said Dr Chetan Sobti, director, Nichepharm Lifesciences Private Limited, described the evolution of pharma companies in India while Dr PN Pandey, founder, Penam Laboratories Pvt Ltd underlined the opportunities in the pharma sector in the post-independent India. Rajinder K. Harna, former Assistant State Drugs Controller, Food and Drug Administration, Haryana, explained the growth of the pharma industry of India in the pre-independence and post-independence times.

The Tribune Thu, 10 June 2021 https://epaper.tribunein

कौशल विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं व्यावसायिक पाठ्यक्रम : प्रो. आर.सी. कुहाड़

चंडीगढ़। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा कोरोना महामारी के बीच दिखाए गए आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में कौशल विकास की दिशा में बढ़ने वाला हर कदम उपयोगी है। कौशल विकास हेतु व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की महत्ता को इस बात से समझा जा सकता है कि इन पाठ्यक्रमों के अंतर्गत विद्यार्थियों को उद्योग जगत की आवश्यकताओं के अनुरूप इस तरह से तैयार किया जाता है कि वे पढ़ाई पूरी करते ही कार्य क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए तैयार हो जाते हैं।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने यह विचार बुधवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित वेबिनार को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने इस मौके पर विश्वविद्यालय में उपलब्ध व्यावसायिक अध्ययन एवं कौशल विकास विभाग के अंतर्गत उपलब्ध पाठ्यक्रमों का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए बताया कि किस तरह से इन पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों को उद्योग जगत की मौजूदा आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षित-प्रशिक्षित किया जा रहा है। बायोफार्मास्युटिकल इंडस्ट्री के इतिहास, वर्तमान व भविष्य को केंद्र में रखते हुए 'आत्मनिर्भर भारत' और 'शताब्दी संकल्प' आधारित इस वेबिनार का शुभारम्भ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति प्रदर्शित करने वाली डाक्यूमेंट्री दिखाई गई। अध्यक्षीय सम्बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने नई शिक्षा नीति में वर्णित कौशल विकास के महत्त्व से अवगत कराया और बताया कि किस तरह से भारत इस दिशा में प्रगति के पथ पर अग्रसर है। कुलपति ने कहा कि व्यावसायिक शिक्षा या कौशल विकास आपके लिए बेहद उपयोगी है। यह आपको क्षेत्र विशेष की बारीकियों से अवगत कराता है और उसमें निपुण बनाता है। कुलपति ने भारत के संदर्भ में कहा कि देश में बायोफार्मास्युटिकल इंडस्ट्री तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर है और इसमें उज्ज्वल भविष्य की अपार सम्भावनाएं उपलब्ध हैं।

आयोजन में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में उपस्थित निचिफार्म लाइफ साइंसेज के सह-संस्थापक व निदेशक डॉ. चेतन सोब्ती ने भारत में फार्मा कम्पनियों के लिए उपलब्ध सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला और बताया कि किस तरह से यह क्षेत्र तेजी से विकास की ओर अग्रसर है। इसी तरह पेनेम लेबोरेट्रीज प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक व एमडी डॉ. पी.एन. पांडे ने आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में फार्मा कम्पनियों के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने आजादी से पहले व आजादी के बाद इस क्षेत्र में हुए विकास पर विस्तार से चर्चा की।

इसी कड़ी में फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन, हरियाणा में पूर्व असिस्टेंट स्टेट ड्रग कंट्रोलर राजेंद्र के. हरना ने फार्मा इंडस्ट्री के विकास और विस्तार पर चर्चा की और इस क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीकों के उपयोग पर विस्तार से जानकारी उपलब्ध कराई। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में प्रशिक्षित युवाओं की मांग लगातार बनी हुई है। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र प्रशांत ने पेनेम लेबोरेट्रीज से संबंधित सजीव कार्यप्रणाली को भी प्रतिभागियों के समक्ष ऑनलाइन माध्यम से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के आरम्भ में आजादी का अमृत महोत्सव की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के विषय में जानकारी दी तथा डॉ. विनोद कुमार ने कुलपति महोदय का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. पवन कुमार मौर्य ने बताया कि बी.वोक. बायोमेडिकल साइंसेज पाठ्यक्रम के शिक्षकों के सहयोग से आयोजित इस वेबिनार के माध्यम से विद्यार्थियों व अन्य प्रतिभागियों को इस क्षेत्र के जुड़े विभिन्न पक्षों को जानने का अवसर मिला होगा। इस आयोजन में डॉ. विकास सैनी, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. मनीष कुमार व डॉ. सरन प्रसाद ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन सुश्री ऋचा ने प्रस्तुत किया।।

कौशल विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं व्यावसायिक पाठ्यक्रम- प्रो. आर.सी. कुहाड़

नारनौल, राजेश राज गोयल।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के द्वारा कोरोना महामारी के बीच दिखाए गए आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में कौशल विकास की दिशा में बढ़ने वाला हर कदम उपयोगी है। कौशल विकास हेतु व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की महत्ता को इस बात से समझा जा सकता है कि इन पाठ्यक्रमों के अंतर्गत विद्यार्थियों को उद्योग जगत की आवश्यकताओं के अनुरूप इस तरह से तैयार किया जाता है कि वे पढ़ाई पूरी करते ही कार्य क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए तैयार हो जाते हैं। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने यह विचार बुधवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित वेबिनार को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने इस मौके पर विश्वविद्यालय में उपलब्ध व्यावसायिक अध्ययन एवं कौशल विकास विभाग के अंतर्गत उपलब्ध पाठ्यक्रमों का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए बताया कि किस तरह से इन पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों को उद्योग जगत की मौजूदा आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षित-प्रशिक्षित किया जा रहा है।

बायोफार्मास्युटिकल इंडस्ट्री के इतिहास, वर्तमान व भविष्य को केंद्र में रखते हुए 'आत्मनिर्भर भारत' और 'शताब्दी संकल्प' आधारित इस वेबिनार का शुभारम्भ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति प्रदर्शित करने वाली डाक्यूमेंट्री दिखाई गई। अध्यक्षीय सम्बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने नई शिक्षा नीति में वर्णित कौशल विकास के महत्त्व से अवगत कराया और बताया कि किस तरह से भारत इस दिशा में प्रगति के पथ पर अग्रसर है। कुलपति ने कहा कि व्यावसायिक शिक्षा या कौशल विकास आपके लिए बेहद उपयोगी है। यह आपको क्षेत्र विशेष की बारीकियों से अवगत कराता है और उसमें निपुण बनाता है। कुलपति ने भारत के संदर्भ में कहा कि देश में बायोफार्मास्युटिकल इंडस्ट्री तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर है और इसमें उज्ज्वल भविष्य की अपार सम्भावनाएं उपलब्ध है।

आयोजन में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में उपस्थित निचिफार्म लाइफ साइंसेज के सह-संस्थापक व निदेशक डॉ. चेतन सोब्ती ने भारत में फार्मा कम्पनियों के लिए उपलब्ध सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला और बताया कि किस तरह से यह क्षेत्र तेजी से विकास की ओर अग्रसर है। इसी तरह पेनेम लेबोरेट्रीज प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक व एमडी डॉ. पी.एन. पांडे ने आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में फार्मा कम्पनियों के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने आजादी से पहले व आजादी के बाद इस क्षेत्र में हुए विकास पर विस्तार से चर्चा की। इसी कड़ी में फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन, हरियाणा में पूर्व असिस्टेंट स्टेट ड्रग कंट्रोलर राजेंद्र के. हरना ने फार्मा इंडस्ट्री के विकास और विस्तार पर चर्चा की और इस क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीकों के उपयोग पर विस्तार से जानकारी उपलब्ध कराई। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में प्रशिक्षित युवाओं की मांग लगातार बनी हुई है। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र प्रशांत ने पेनेम लेबोरेट्रीज से संबंधित सजीव कार्यप्रणाली को भी प्रतिभागियों के समक्ष ऑनलाइन माध्यम से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के आरम्भ में आजादी का अमृत महोत्सव की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के विषय में जानकारी दी तथा डॉ. विनोद कुमार ने कुलपति महोदय का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. पवन कुमार मौर्य ने बताया कि बी.वोक. बायोमेडिकल साइंसेज पाठ्यक्रम के शिक्षकों के सहयोग से आयोजित इस वेबिनार के माध्यम से विद्यार्थियों व अन्य प्रतिभागियों को इस क्षेत्र के जुड़े विभिन्न पक्षों को जानने का अवसर मिला होगा। इस आयोजन में डॉ. विकास सैनी, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. मनीष कुमार व डॉ. सरन प्रसाद ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन सुश्री ऋचा ने प्रस्तुत किया।

फिर बजा डंका

शोध के क्षेत्र में आइआइएससी बेंगलुरु दुनिया का शीर्ष संस्थान

क्यूएस वर्ल्ड रैंकिंग-200 में दो और भारतीय उच्च शिक्षण संस्थानों ने बनाई जगह, कई अन्य संस्थानों ने भी पिछले साल के मुकाबले अपनी स्थिति सुधारी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

दुनिया में भारतीय ज्ञान और विज्ञान का डंका फिर बजा है। क्वाक्वारेली साइमंड्स (क्यूएस) वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग-2022 में शोध के क्षेत्र में भारतीय विज्ञान संस्थान (आइआइएससी) बेंगलुरु को दुनियाभर में पहला स्थान हासिल हुआ है। इस क्षेत्र में आइआइटी गुवाहाटी ने भी 41 वें स्थान के साथ अपनी मजबूत जगह बनाई है। वहीं ओवरआल रैंकिंग में दुनिया के शीर्ष के दो सौ संस्थानों में तीन भारतीय उच्च शिक्षण संस्थानों ने जगह बनाई है। इनमें आइआइटी बांबे 177वें, आइआइटी दिल्ली 185वें और आइआइएससी 186 वें स्थान पर है।

दुनियाभर के उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रदर्शन को सालाना आंकने वाली लंदन स्थित क्यूएस एजेंसी ने बुधवार को वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग-2022 जारी की। इसमें दुनिया के शीर्ष हजार में इस बार 22 भारतीय संस्थानों ने जगह बनाई है। 2021 में 21 संस्थान शीर्ष हजार में शामिल थे। हालांकि इस बार आइआइटी बांबे की रैंकिंग में गिरावट आई है। पिछले साल इसकी रैंकिंग 172 थी, जो इस बार 177 रही। वहीं आइआइटी दिल्ली ने प्रदर्शन सुधारा है और पिछले साल के 197वें स्थान के मुकाबले इस बार 185वें स्थान पर है। विश्वविद्यालयों की श्रेणी में दिल्ली विश्वविद्यालय और जेएनयू ने जगह बनाई है। क्यूएस रैंकिंग में जेएनयू पहली बार शामिल हुआ। दिल्ली विश्वविद्यालय का स्थान 501-510 में और जेएनयू का स्थान 561-570 में शामिल है। इस रैंकिंग में शीर्ष के सौ में एक भी भारतीय संस्थान को जगह नहीं मिली है।

ओवरआल रैंकिंग में आइआइटी दिल्ली 185वें स्थान पर

आइआइएससी की इमारत: फाइल फोटो

आइआइएससी बेंगलुरु, आइआइटी बांबे और आइआइटी दिल्ली को बधाई। ज्यादा से ज्यादा भारतीय विश्वविद्यालयों और संस्थानों को वैश्विक मानकों पर लाने और युवाओं की बौद्धिक क्षमता को सहयोग देने का सतत प्रयास जारी है।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

भारत फिर से विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर : निशंक

केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने क्यूएस रैंकिंग में भारतीय उच्च शिक्षण संस्थानों के बेहतर प्रदर्शन पर खुशी जताई और कहा कि भारत फिर से विश्वगुरु बनने की ओर बढ़ रहा है। शोध को बढ़ावा देने के लिए पिछले कुछ वर्षों से प्रधानमंत्री की अगुआई में जिस तरह से काम किया जा रहा है, उसका परिणाम है कि भारतीय संस्थान शोध के क्षेत्र में दुनिया के शीर्ष पर पहुंच गया है। उन्होंने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पूरी तरह से अमल के बाद इसमें और भी बड़ी छलांग दिखेगी। क्यूएस रैंकिंग 2022 में इस साल भी मैसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ने दुनियाभर में पहला मुकाम हासिल किया है। दूसरे स्थान पर यूनिवर्सिटी आफ आक्सफोर्ड और तीसरे स्थान पर स्टेनफोर्ड व कैंब्रिज यूनिवर्सिटी ने संयुक्त रूप से जगह बनाई है।

कौशल विकास में व्यावसायिक पाठ्यक्रम की भूमिका महत्त्वपूर्ण

हकेंवि में वेबिनार

महेंद्रगढ़ | आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में कौशल विकास की दिशा में बढ़ने वाला हर कदम उपयोगी है। कौशल विकास हेतु व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की महत्ता को इस बात से समझा जा सकता है कि इन पाठ्यक्रमों के अंतर्गत विद्यार्थियों को उद्योग जगत की आवश्यकताओं के अनुरूप इस तरह से तैयार किया जाता है कि वे पढ़ाई पूरी करते ही कार्य क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन के लिए तैयार हो जाते हैं।

हकेंवि, महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने यह विचार बुधवार को आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित वेबिनार को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। विश्वविद्यालय में व्यावसायिक अध्ययन एवं कौशल विकास विभाग के अंतर्गत उपलब्ध पाठ्यक्रमों का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि किस तरह से इन पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों को उद्योग जगत की मौजूदा आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षित-प्रशिक्षित किया जा रहा है। आयोजन में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में उपस्थित निचिफार्म लाइफ साइंसेज के सह-संस्थापक व निदेशक डॉ. चेतन सोबती ने भारत में फार्मा कम्पनियों के लिए उपलब्ध सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला। इसी तरह पेनेम लेबोरेट्रीज प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक व एमडी डॉ. पीएन पांडे ने आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में फार्मा कम्पनियों के योगदान पर प्रकाश डाला। हरियाणा में पूर्व असिस्टेंट स्टेट ड्रग कंट्रोलर राजेंद्र के. हरना ने फार्मा इंडस्ट्री के विकास और विस्तार पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में प्रशिक्षित युवाओं की मांग लगातार बनी हुई है। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र प्रशांत ने पेनेम लेबोरेट्रीज से संबंधित सजीव कार्यप्रणाली को भी प्रतिभागियों के समक्ष ऑनलाइन माध्यम से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के आरम्भ में आजादी का अमृत महोत्सव की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के विषय में जानकारी दी तथा डॉ. विनोद कुमार ने कुलपति का परिचय प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. पवन कुमार मौर्य ने बताया कि बीवॉक बायोमेडिकल साइंसेज पाठ्यक्रम के शिक्षकों के सहयोग से आयोजित इस वेबिनार के माध्यम से विद्यार्थियों व अन्य प्रतिभागियों को इस क्षेत्र के जुड़े विभिन्न पक्षों को जानने का अवसर मिला होगा। इस आयोजन में डॉ. विकास सैनी, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. मनीष कुमार व डॉ. सरन प्रसाद ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन सुश्री ऋचा ने प्रस्तुत किया।

भारतीय राजनीतिक चिंतन को मिलकर दिलानी होगी अंतरराष्ट्रीय पहचानः प्रो. कुहाड़

महेंद्रगढ़,(जगमार्ग न्यूज)। मानव जीवन के विकास और उसके उत्थान में राजनीतिक चिंतन का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। यह हमारे जीवन के सभी आयामों को प्रभावित करता है ऐसे में जब बात भारतीय राजनीतिक चिंतन की बात होती है तो यह वो ज्ञान है जिसे हम भुलाते जा रहे है और पाश्चात्य चिंतन को अपना रहे है जोकि उचित नहीं है। भारत वो देश है जहां मनु, नारद मुनि, श्रीराम, श्रीकृष्ण, विदुर, वेदव्यास, चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक व कौटिल्य जैसे राजनीतिक चिंतन के ज्ञाता उपलब्ध है और उनका ज्ञान हमारे समक्ष है बावजूद इसके हम इस चिंतन को अपना और पहचान दिलाने में कहीं पीछे रह गए है। आज जरूरत है कि हम इस चिंतन को न सिर्फ अपनाए बल्कि उसे राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहचान दिलाए। उक्त विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने राजनीतिक चिंतन की भारतीय दृष्टि विषय पर आयोजित ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा उपस्थित रहे। प्रतिभागियों के समक्ष विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रस्तुत की गई। राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राजवीर दलाल ने विषय पर प्रकाश डालते हुए कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ व विशेषज्ञ वक्ता प्रो. संजीव कुमार शर्मा का परिचय प्रस्तुत किया और उनका आभार व्यक्त किया। प्रो. आरसी कुहाड़ ने अपने संबोधन में राजनीतिक विज्ञान और उसके भारतीय चिंतन का उल्लेख करते हुए, उसके प्रचार -प्रसार की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारतीय राजनीतिक चिंतन की बात करें तो यह रामायण, महाभारत और पुराणों में विस्तार से वर्णित है और चिंतकों के रूप में भारत की बात करें तो पुरातन काल से लेकर आधुनिक भारत तक हमारे पास विद्वानों और उनके ज्ञान का अथाह भंडार मौजूद है।

भारतीय राजनीतिक चिंतन को मिलकर दिलानी होगी अंतरराष्ट्रीय पहचानः प्रो. आर.सी. कुहाड़

नारनौल, राजेश राज गोयल

मानव जीवन के विकास और उसके उत्थान में राजनीतिक चिंतन का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। यह हमारे जीवन के सभी आयामों

को प्रभावित करता है ऐसे में जब बात भारतीय राजनीतिक चिंतन की बात होती है तो यह वो ज्ञान है जिसे हम भुलाते जा रहे है और पाश्चात्य चिंतन को अपना रहे हैं जोकि उचित नहीं हैं। भारत वो देश है जहां मनु, नारद मुनि, श्रीराम, श्रीकृष्ण, विदुर, वेदव्यास, चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक व कौटिल्य जैसे राजनीतिक चिंतन के ज्ञाता उपलब्ध है और उनका ज्ञान हमारे समक्ष है बावजूद इसके हम इस चिंतन को अपनाने और पहचान दिलाने में कहीं पीछे रह गए है। आज जरूरत है कि हम इस चिंतन को न सिर्फ अपनाए बल्कि उसे राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहचान दिलाए। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो.आर.सी.कुहाड़ ने राजनीतिक चिंतन की भारतीय दृष्टि विषय पर आयोजित ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा उपस्थित रहे।

वेबिनार का आरंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ हुआ। इसके पश्चात् विशेषज्ञ वक्ता व प्रतिभागियों के समक्ष विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रस्तुत की गई। राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राजवीर दलाल ने विषय पर प्रकाश डालते हुए कुलपति प्रो.आर.सी.कुहाड़ व विशेषज्ञ वक्ता प्रो.संजीव कुमार शर्मा का परिचय प्रस्तुत किया और उनका आभार व्यक्त किया। प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने अपने संबोधन में राजनीतिक विज्ञान और उसके भारतीय चिंतन का उल्लेख करते हुए, उसके प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। प्रो. कुहाड़ ने कहा कि भारतीय राजनीतिक चिंतन की बात करें तो यह रामायण, महाभारत और पुराणों में विस्तार से वर्णित है और चिंतकों के रूप में भारत की बात करें तो पुरातन काल से लेकर आधुनिक भारत तक हमारे पास विद्वानों और उनके ज्ञान का अथाह भंडार मौजूद है। प्रो.कुहाड़ ने कहा कि कहीं न कहीं कुछ दशा ऐसी रही कि हम इस चिंतन को अंतर्राष्ट्रीय मंच तक पहचान दिला पाने में कामयाब नहीं हो पाए लेकिन अभी भी देर नहीं हुई और अवश्य ही हमें इसके लिए प्रयास करना चाहिए। कुलपति ने कहा कि राजनीति विज्ञान विषय एक एप्लायड पाठ्यक्रम है और इसके संदर्भ में कौशल विकास के स्तर पर भी सोचने की जरूरत है। राजनीतिक चिंतन के मामले में हमें अब पाश्चात्य सिद्धांतों से आगे बढ़कर भारतीय सिद्धांतों को अपनाने और उनके प्रचार-प्रसार पर ध्यान देना होगा और उनका पोषण करना होगा। कुलपति ने इस अवसर पर प्लेटो के विद्वान का उल्लेख करते हुए कहा कि उनका कहना था कि भारत को अपने चिंतन को, ज्ञान को बचाना होगा और उसके लिए ठोस प्रयास आवश्यक है। इस दिशा में जारी डिजीटलाइजेशन का उल्लेख भी कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने किया और कहा कि विश्वविद्यालयों के स्तर पर भी इस दिशा में परिश्रम करना होगा और इस मोर्चे पर भी आत्मनिर्भर बनाना होगा। विशेषज्ञ वक्ता प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने अपने संबोधन की शुरुआत में करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि हमें भारतीय ज्ञान, परम्परा, वैभव, कल्याण आदि की ओर लौटाना होगा और उसके अनुरूप भी अपने प्राचीन राजनीतिक चिंतन को पुनर्स्थापित करना होगा। उन्होंने कहा कि हो सकता है कि बदलते समय के अनुरूप सभी सिद्धांत उपयोगी न हो लेकिन जो स्वीकार्य है और जिनका उपयोगिता आज भी बनी हुई है उनके अध्ययन, उनसे संबंधित शोध और उनके प्रति स्वीकार्यता को विकसित करना बेहद जरूरी है। प्रो. शर्मा ने आगे कहा कि भारत विशिष्ट है, पुरातन है, यही सर्वप्रथम गीत, ग्रंथ, श्लोक व काव्य आदि की रचना का उल्लेख मिलता है ऐसे में हमे चाहिए की हम इस ज्ञान को पहचाने और इसके प्रचार -प्रसार व इसकी विश्व पटल पर स्वीकार्यता स्थापित करने में योगदान दे। उन्होंने कहा कि राजनीति के प्रति लोगों का रवैया उचित देखने को नहीं मिलता है जबकि यह आपके जीवन से मृत्यु तक के समूचे कालचक्र को किसी न किसी रूप में प्रभावित करती है और नियंत्रित भी करती है। शादी की उम्र का निर्धारण हो या फिर वोट डालने की आयु सीमा आदि यह सभी निर्णय राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत ही लिए जाते है इसलिए इसके प्रति स्वीकार्यता का भाव जरूरी हैं। प्रो. शर्मा ने अपने संबोधन में राजा के प्रति भारतीय व्यवस्था का भी उल्लेख किया जहां उसे प्रजा के पिता के रूप, पालक के रूप में पहचाना जाता है उन्होंने कहा कि यहां राजा निरंकुश नहीं होता है और समूची राज व्यवस्था एक सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत आती है। राजनीतिक व्यवस्था सामाजिक परिधि के अंतर्गत नियमित होती है और निर्धारित व व्यवस्थित होती है। उन्होंने कहा कि आज जरूरत है कि प्राचीन भारतीय चिंतन के विकास की दिशा में हम सभी मिलकर प्रयास करें और इस कार्य में शिक्षण संस्थानों की भूमिका बेहद अहम है। प्रो. शर्मा ने इस मौके पर प्रो. आर.सी.कुहाड़ के कुशल नेतृत्व में हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की प्रगति की भी प्रशंसा की।

विश्वविद्यालय में आयोजित इस वेबिनार का आयोजन राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राजबीर दलाल व सुश्री श्वेता सोहल के प्रयासों से किया गया। प्रो. राजबीर दलाल ने बताया कि विभाग की ओर से आयोजित व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत यह छठा आयोजन है। उन्होंने बताया कि इस वेबिनार में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, विद्यार्थी व शोधार्थी उपस्थित रहें। इस आयोजन के सफलतम संचालन विभाग की सहायक आचार्य व आयोजन सचिव सुश्री श्वेता सोहल ने किया तथा सह-आचार्य डॉ. रमेश कुमार ने प्रश्नोत्तर काल का संचालन किया । कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन विभाग के सहायक आचार्य डॉ.राजीव कुमार सिंह ने प्रस्तुत किया। इस अवसर विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षणेत्तर कर्मचारी व अन्य शिक्षण संस्थानों से भी प्रतिभागी ऑनलाइन उपस्थित रहे।

चिंतन-मनन | महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने रखे अपने विचार

भारतीय राजनीतिक चिंतन को दिलानी होगी अंतरराष्ट्रीय पहचानः प्रो. कुहाड़

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़ : मानव जीवन के विकास और उसके उत्थान में राजनीतिक चिंतन का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। यह हमारे जीवन के सभी आयामों को प्रभावित करता है ऐसे में जब बात भारतीय राजनीतिक चिंतन की बात होती है तो यह वो ज्ञान है, जिसे हम भुलाते जा रहे हैं। पाश्चात्य चिंतन को अपना रहे हैं, जोकि उचित नहीं है।

भारत वो देश है जहां मनु, नारद मुनि, श्रीराम, श्रीकृष्ण, विदुर, वेदव्यास, चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक व कौटिल्य जैसे राजनीतिक चिंतन के ज्ञाता उपलब्ध हैं। इनका ज्ञान हमारे समक्ष है। बावजूद इसके हम इस चिंतन को अपनाने और पहचान दिलाने में कहीं पीछे रह गए है। आज जरूरत है कि हम इस चिंतन को न सिर्फ अपनाने की, बल्कि उसे राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहचान दिलाई जानी चाहिए।

यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो.आरसी कुहाड़ ने राजनीतिक चिंतन की भारतीय दृष्टि विषय पर आयोजित आनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा उपस्थित रहे। बेबिनार का आरंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ हुआ। इसके पश्चात विशेषज्ञ वक्ता व प्रतिभागियों के समक्ष विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली एक डाक्यूमेंट्री फिल्म प्रस्तुत की गई।

प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि भारतीय राजनीतिक चिंतन की बात करें तो यह रामायण, महाभारत और पुराणों में विस्तार से वर्णित है और चिंतकों के रूप में भारत की बात करें तो पुरातन काल

प्रो. आरसी कुहाड़ ● जागरण

से लेकर आधुनिक भारत तक हमारे पास विद्वानों और उनके ज्ञान का अथाह भंडार मौजूद है।

उन्होंने कहा कि राजनीति विज्ञान विषय एक एप्लायड पाठ्यक्रम है और इसके संदर्भ में कौशल विकास के स्तर पर भी सोचने की जरूरत है। राजनीतिक चिंतन के मामले में हमें अब पाश्चात्य सिद्धातों से आगे बढ़कर भारतीय सिद्धातों को अपनाने और उनके प्रचार-प्रसार पर ध्यान देना होगा और उनका पोषण करना होगा। कुलपति ने इस अवसर पर पालैंड के विद्वान का उल्लेख करते हुए कहा कि उनका कहना था कि भारत को अपने चिंतन को, ज्ञान को बचाना होगा और उसके लिए ठोस प्रयास आवश्यक है। इस दिशा में जारी डिजीटलाइजेशन का उल्लेख भी कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने किया।विशेषज्ञ वक्ता प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने अपने संबोधन की शुरुआत में करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि हमें भारतीय ज्ञान, परम्परा, वैभव, कल्याण आदि की ओर लौटाना होगा और उसके अनुरूप भी अपने प्राचीन राजनीतिक चिंतन को पुनर्स्थापित करना होगा।

उन्होंने कहा कि हो सकता है कि बदलते समय के अनुरूप सभी सिद्धांत उपयोगी न हो लेकिन जो स्वीकार्य है और जिनका उपयोगिता आज भी बनी हुई है उनके अध्ययन, उनसे संबंधित शोध और उनके प्रति स्वीकार्यता को विकसित करना बेहद जरूरी है। इस वेबिनार का आयोजन राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राजबीर दलाल व सुश्री श्वेता सोहल के प्रयासों से किया गया।

प्रो. राजबीर दलाल ने बताया कि विभाग की ओर से आयोजित व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत यह छठा आयोजन है। संचालन विभाग की सहायक आचार्य व आयोजन सचिव सुश्री श्वेता सोहल ने किया तथा सह- आचार्य डा. रमेश कुमार ने प्रश्नोत्तर काल का संचालन किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन विभाग के सहायक आचार्य डा. राजीव कुमार सिंह ने प्रस्तुत किया। विवि के विभिन्न विभागों के शिक्षक, विद्यार्थी, शोधार्थी व अन्य शिक्षण संस्थानों से भी प्रतिभागी आनलाइन उपस्थित रहे।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अमल में अब दिखेगी तेजी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कोरोनाकाल में अमल पर पड़े प्रभाव से उबरने को शिक्षा मंत्रालय ने झोंकी ताकत

कोरोना संकट काल में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सुस्त पड़ी रफ्तार को फिर से गति देने का काम शुरू हो गया है। शिक्षा मंत्रालय ने इसे लेकर नीति के अमल से जुड़ी सभी एजेंसियों को तय किए गए लक्ष्य को समयसीमा के भीतर पूरा करने के निर्देश दिए है। वैसे भी नीति के अमल के लिए जो 300 टास्क चिह्नित किए गए थे, उनमें से करीब 80 फीसद टास्क पर इसी साल से काम होना था। इसमें स्कूलों में कोडिंग और डाटा साइंस को पाठ्यक्रम में शामिल करना और विश्वविद्यालयों में दाखिले के लिए संयुक्त प्रवेश परीक्षा शुरू करने जैसी अहम सिफारिशें शामिल हैं।

शिक्षा मंत्रालय के निर्देश के बाद फिलहाल सभी एजेंसियां अपने-अपने लक्ष्यों के अमल को लेकर सक्रिय हो गई हैं। विश्वविद्यालयों में दाखिले को लेकर संयुक्त प्रवेश परीक्षा कराने की योजना को फिर से रफ्तार दी जा रही है। साथ ही इसे लेकर सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ चर्चा की गई है। कोरोना संकट काल में इस योजना का काम सुस्त हो गया था, लेकिन मंत्रालय का इस बात पर जोर है कि इसी साल से इसे लागू करने की संभावनाएं परखी जाएं। भले ही इसे सिर्फ केंद्रीय विश्वविद्यालयों तक ही सीमित रखा जाए। वैसे भी सरकार का पूरा फोकस लक्ष्यों को तय समय सीमा के भीतर पूरा करने को लेकर है। इस बीच यूजीसी ने सभी विश्वविद्यालयों से अपने सभी पाठ्यक्रमों को आनलाइन भी शुरू करने का सुझाव दिया है। नई शिक्षा नीति में इसके अमल की भी सिफारिश की गई थी। इसके साथ ही नीति में स्कूली शिक्षा के दायरे में प्री-प्राइमरी को लाने की सिफारिश की गई है। जो इस साल के टास्क में शामिल है। मंत्रालय ने नए वित्त वर्ष से इसे मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही मिड-डे मील के दायरे को विस्तार देते हुए इस साल से प्री- प्राइमरी को भी इनमें शामिल कर लिया है। नीति के अमल में हाल ही में एक बड़ा कदम बढ़ाते हुए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने नीति के अमल से जुड़े तय टास्क के तहत अपने से संबद्ध देश भर के सभी स्कूलों में कोडिंग और डाटा साइंस की पढ़ाई कराने का फैसला ले लिया है। इस बीच स्कूलों के लिए नए पाठ्यक्रम को भी तैयार करने का काम शुरू हो गया है।

भारतीय राजनीतिक चिंतन को मिलकर दिलानी होगी अंतर्राष्ट्रीय पहचानः प्रो. कुहाड़

चेतना ब्यूरो।
महेंद्रगढ़।

मानव जीवन के विकास और उसके उत्थान में राजनीतिक चिंतन का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। यह हमारे जीवन के सभी आयामों को प्रभावित करता है ऐसे में जब बात भारतीय राजनीतिक चिंतन की बात होती है तो यह वो ज्ञान है जिसे हम भुलाते जा रहे है और पाश्चात्य चिंतन को अपना रहे हैं जोकि उचित नहीं हैं। भारत वो देश है जहां मनु, नारद मुनि, श्रीराम, श्रीकृष्ण, विदुर, वेदव्यास, चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक व कौटिल्य जैसे राजनीतिक चिंतन के ज्ञाता उपलब्ध है और उनका ज्ञान हमारे समक्ष है बावजूद इसके हम इस चिंतन को अपनाने और पहचान दिलाने में कहीं पीछे रह गए है। आज जरूरत है कि हम इस चिंतन को न सिर्फ अपनाए बल्कि उसे राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहचान दिलाए। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो.आर.सी.कुहाड़ ने राजनीतिक चिंतन की भारतीय दृष्टि विषय पर आयोजित ऑनलाइन विशेषज्ञ व्ख्याख्यान को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा उपस्थित रहे।

बेबिनार का आरंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ हुआ। इसके पश्चात् विशेषज्ञ वक्ता व प्रतिभागियों के समक्ष विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रस्तुत की गई। राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राजवीर दलाल ने विषय पर प्रकाश डालते हुए कुलपति प्रो.आर.सी.कुहाड़ व विशेषज्ञ वक्ता प्रो.संजीव कुमार शर्मा का परिचय प्रस्तुत किया और उनका आभार व्यक्त किया। प्रो. आर.सी. कुहाड ने अपने संबोधन में राजनीतिक विज्ञान और उसके भारतीय चिंतन का उल्लेख करते हुए, उसके प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। प्रो. कुहाड़ ने कहा कि भारतीय राजनीतिक चिंतन की बात करें तो यह रामायण, महाभारत और पुराणों में विस्तार से वर्णित है और चिंतकों के रूप में भारत की बात करें तो पुरातन काल से लेकर आधुनिक भारत तक हमारे पास विद्धानों और उनके ज्ञान का अथाह भंडार मौजूद है। प्रो.कुहाड़ ने कहा कि कहीं न कहीं कुछ दशा ऐसी रही कि हम इस चिंतन को अंतर्राष्ट्रीय मंच तक पहचान दिला पाने में कामयाब नहीं हो पाए लेकिन अभी भी देर नहीं हुई और अवश्य ही हमें इसके लिए प्रयास करना चाहिए। कुलपति ने कहा कि राजनीति विज्ञान विषय एक एप्लायड पाठ्यक्रम है और इसके संदर्भ में कौशल विकास के स्तर पर भी सोचने की जरूरत है। राजनीतिक चिंतन के मामले में हमें अब पाश्चात्य सिंद्धातों से आगे बढ़कर भारतीय सिंद्धातों को अपनाने और उनके प्रचार-प्रसार पर ध्यान देना होगा और उनका पोषण करना होगा। कुलपति ने इस अवसर पर पौलेंड के विद्वान का उल्लेख करते हुए कहा कि उनका कहना था कि भारत को अपने चिंतन को, ज्ञान को बचाना होगा और उसके लिए ठोस प्रयास आवश्यक है। इस दिशा में जारी डिजीटलाइजेशन का उल्लेख भी कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने किया और कहा कि विश्वविद्यालयों के स्तर पर भी इस दिशा में परिश्रम करना होगा और इस मोर्चे पर भी आत्मनिर्भर बनाना होगा।

मानव जीवन के विकास में राजनीतिक चिंतन का महत्वपूर्ण योगदान : प्रो. आरसी कुहाड़

राजनीति विज्ञान विभाग की व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत आयोजित हुआ ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंविवि), महेंद्रगढ़ में राजनीतिक चिंतन की भारतीय दृष्टि विषय पर आयोजित ऑनलाइन विशेषज्ञ व्याख्यान को आयोजित किया गया।

कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने व्याख्यान को संबोधित करते हुए कहा कि मानव जीवन के विकास और उसके उत्थान में राजनीतिक चिंतन का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। यह हमारे जीवन के सभी आयामों को प्रभावित करता है ऐसे में जब बात भारतीय राजनीतिक चिंतन की बात होती है तो यह वो ज्ञान है जिसे हम भुलाते जा रहे है और पाश्चात्य चिंतन को अपना रहे हैं जोकि उचित नहीं हैं। विशेषज्ञ वक्ता के रूप में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा उपस्थित रहे।

विशेषज्ञ वक्ता, प्रतिभागियों के समक्ष विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म प्रस्तुत की गई। राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राजवीर दलाल ने इस विषय पर प्रकाश डालते हुए कुलपति प्रो.आरसी कुहाड़, विशेषज्ञ वक्ता प्रो.संजीव कुमार शर्मा का परिचय प्रस्तुत किया और उनका आभार व्यक्त किया। प्रो. आरसी कुहाड ने राजनीतिक विज्ञान और उसके भारतीय चिंतन का उल्लेख करते हुए, उसके प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला।

ऑनलाइन व्याख्यान को संबोधित करते कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़। *संवाद*

विशेषज्ञ वक्ता प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि अब समय आ गया है कि हमें भारतीय ज्ञान, परंपरा, वैभव, कल्याण की ओर लौटाना होगा और उसके अनुरूप भी अपने प्राचीन राजनीतिक चिंतन को पुनर्स्थापित करना होगा। उन्होंने कहा कि हो सकता है कि बदलते समय के अनुरूप सभी सिद्धांत उपयोगी न हो लेकिन जो स्वीकार्य है और जिनका उपयोगिता आज भी बनी हुई है उनके अध्ययन, उनसे संबंधित शोध और उनके प्रति स्वीकार्यता को विकसित करना बेहद जरूरी है। शादी की उम्र का निर्धारण हो या फिर वोट डालने की आयु सीमा आदि यह सभी निर्णय राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत ही लिए जाते है इसलिए इसके प्रति स्वीकार्यता का भाव जरूरी हैं।

विश्वविद्यालय में आयोजित इस वेबिनार का आयोजन राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राजबीर दलाल, श्वेता सोहल के प्रयासों से किया गया। प्रो. राजबीर दलाल ने बताया कि विभाग की ओर से आयोजित व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत यह छठा आयोजन है। उन्होंने बताया कि इस वेबिनार में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, विद्यार्थी, शोद्यार्थी उपस्थित रहें। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. राजीव कुमार सिंह ने प्रस्तुत किया। संवाद

SERIES OF ONLINE LECTURE LAUNCHED

Mahendragarh: Central University of Haryana (CUH) launched an online international series on the Covid pandemic. Sudhendu Jyoti Sinha, Adviser to NITI Aayog while addressing the participants expressed his views regarding the action plan implemented at the ground level to deal with the Covid epidemic. He, through a presentation focused on India's fight against the pandemic, told how various challenges were faced! Vice Chancellor Prof RC Kuhad said the pandemic was a challenge for the whole world. The solution was possible only through mutual cooperation and trust in governance and administration.

The Tribune Mon, 07 June 2021 https://epaper.tribuneindi

पर्यावरण की रक्षा करने में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण : डॉ. सुमन

हकेंवि में कार्यशाला का आयोजन

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

विश्व पर्यावरण को लेकर हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में ऑनलाइन कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में बिहार के लघु सिंचाई, जल संसाधन विकास एवं अनुसूचित जाति जनजाति कल्याण विभाग के मंत्री डॉ. संतोष कुमार सुमन ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की।

साथ ही इंस्टीट्यूट ऑफ इंवायरनमेंट एंड डवलपमेंट, यूनिवर्सिटी कबांग्सां मलेशिया की विजिटिंग प्रोफेसर रहमा एल्फिथ्री, गैलेक्सी मेगनम लिमिटेड एमईपी विभाग के प्रमुख इंजीनियर अशोक बंसल, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर बलदेव सेतिया विशेषज्ञ वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी तथा पर्यावरण अध्ययन विभाग के तत्वावधान में आईआईटी, रूड़की, राष्ट्रीय सेवा योजना व यूथ रेडक्रॉस के सहयोग से इकोसिस्टम रेस्टोरेशन विषय पर आयोजित इस कार्यशाला की शुरूआत विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुई। इसके पश्चात विश्वविद्यालय सुमन ने अपने संबोधन में प्रमुख रूप से पर्यावरण की रक्षा में युवाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि आज की युवा पीढ़ी को पर्यावरण की रक्षा के महत्व को समझना होगा और उसके लिए हर मोर्चे पर प्रयास करना होगा।

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी. कुहाड़ ने पर्यावरण के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पारिस्थितिक तंत्र की व्यवस्था में सुधार की दिशा में व्यापक स्तर पर बदलाव व प्रयास करने होंगे। इसी क्रम में विशेषज्ञ वक्ता इंजीनियर अशोक बंसल ने अपने सम्बोधन में बताया कि वातावरण की जो समस्याएं हैं वह पिछले दशक के तेज तकनीकी विकास का परिणाम हैं। कार्यशाला के अंत में धन्यवाद ज्ञापन विश्वविद्यालय की एनएसएस इकाई के समन्वयक डॉ. दिनेश चहल ने प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु उन्होंने संयोजक प्रो. नीलम सांगवान, डॉ. अजय कुमार बंसल, डॉ. विकास गर्ग, आयोजन समिति के डॉ. राजेश कुमार दुबे, डॉ. फूल सिंह, डॉ. कल्पना चौहान, डॉ. मनोज सिंह, डॉ. राकेश कुमार, को-ऑर्डिनेटर डॉ. नीरज कुमार, डॉ.

हरिभूमि
रोहतक -महेन्द्रगढ़
6 Jun 2021

भूमिका पड़ा का ह। प्रदूषण क बढ़

हकेंवि में पर्यावरण दिवस के अवसर पर कार्यशाला का आयोजन

महेंद्रगढ़। पृथ्वी हर मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति कर सकती है लेकिन किसी के लालच की नहीं। महात्मा गांधी की इस कथन में छिपे संदेश के माध्यम से हमें पर्यावरण के महत्व समझते हुए और इसको बचाने व संरक्षित करने का संकल्प लेना चाहिए। पर्यावरण की रक्षा से ही मानवता का अस्तित्व सुरक्षित रह सकता है इसलिए अब समय आ गया है हम इसके लिए विशेष रूप से प्रयास करें और इकोसिस्टम रिस्टोरेशन के लिए कार्य करें। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

कार्यशाला में बिहार के लघु सिंचाई, जल संसाधन विकास एवं अनुसूचित जाति जनजाति कल्याण विभाग के मंत्री डॉ. संतोष कुमार सुमन ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की।

मानवता के अस्तित्व के लिए पर्यावरण की रक्षा आवश्य : प्रो.आर.सी.कुहाड़

नारनौल, राजेश राज गोयल।

पृथ्वी हर मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति कर सकती है लेकिन किसी के लालच की नहीं। महात्मा गांधी की इस कथन में छिपे संदेश के माध्यम से हमें पर्यावरण के महत्व समझते हुए और इसको बचाने व संरक्षित करने का संकल्प लेना चाहिए। पर्यावरण की रक्षा से ही मानवता का अस्तित्व सुरक्षित रह सकता है इसलिए अब समय आ गया है हम इसके लिए विशेष रूप से प्रयास करें और इकोसिस्टम रिस्टोरेशन के लिए कार्य करें, यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने शनिवार को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। कार्यशाला में बिहार के लघु सिंचाई, जल संसाधन विकास एवं अनुसूचित जाति जनजाति कल्याण विभाग के मंत्री डॉ. संतोष कुमार सुमन ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। साथ ही इंस्टीटयूट ऑफ इंवायरमेंट एंड डवलपमेंट, यूनिवर्सिटी कॉलेज्स मलेशिया की विजिटिंग प्रोफेसर रहमा एल्फिश्री, गलैक्सी मेगनम लिमिटेड एमईपी विभाग के प्रमुख इंजीनियर अशोक बंसल, नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ टेक्नीलॉजी, सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर बलदेव सेतिया विशेषज्ञ वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी तथा पर्यावरण अध्ययन विभाग के तत्वावधान में आईआईटी, रुड़की, राष्ट्रीय सेवा योजना व यूथ रेडक्रॉस के सहयोग से इकोसिस्टम रिस्टोरेशन विषय पर आयोजित इस कार्यशाला की शुरूआत विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुई। इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति पर आधारित डाक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई गई। कार्यशाला की संयोजक प्रो. नीलम सांगवान ने स्वागत भाषण दिया और विषय के महत्व से अवगत कराया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. संतोष कुमार सुमन ने अपने संबोधन में प्रमुख रूप से पर्यावरण की रक्षा में युवाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि आज की युवा पीढ़ी को पर्यावरण की रक्षा के महत्व को समझना होगा और उसके लिए हर मोर्चे पर प्रयास करना होगा। उन्हें विशेष रूप से इसके लिए जारी विभिन्न अभियानों से जुड़कर पर्यावरण की रक्षा के लिए काम करना होगा। डॉ. सुमन ने आगे कहा की बिहार देश का पहला राज्य है जहां जल जीवन हरियाली प्रोग्राम के अन्तर्गत जल संरक्षण सहित पर्यावरण को बचाने की दिशा में आगामी पांच सालों के लिए कार्ययोजना तैयार कर कार्य किया जा रहा है। डॉ. सुमन ने इस मौके पर प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण और उसके दुष्प्रभावों पर भी चिंता व्यक्त की और कहा कि हमें इससे निबटने के लिए व्यापक पैमाने पर प्रयास करने होंगे। उन्होंने हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में विकसित हरित क्षेत्र की सराहना की और इसके लिए कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ की प्रशंसा भी की।

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने पर्यावरण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पारिस्थितिक तंत्र की व्यवस्था में सुधार की दिशा में व्यापक स्तर पर बदलाव व प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि हरित क्षेत्र के विकास, शहरों में हरियाली के विस्तार सहित खानपान की आदतों में बदलाव और नदियों व तटीय क्षेत्रों की स्वच्छता पर मिलकर काम करना होगा। प्रो. आर. सी. कुहाड़ ने विश्व पर्यावरण दिवस की शुरूआत और उसके उद्देश्यों से भी प्रतिभागियों को अवगत कराया और कहा कि हमें अब विस्तृत कार्ययोजना तैयार कर पर्यावरण के समक्ष मौजूद विभिन्न चुनौतियों का समाधान खोजना होगा और उस पर मिलकर काम करना होगा। कुलपति ने इस अवसर पर भारत के वन पुरुष (फॉरेस्ट मैन) कहे जाने वाले श्री जादव मोलाई पायेंग, श्री सुंदरलाल बहुगुणा, श्रीमती दिविका अम्मा, श्रीमती प्रभा देवी आदि का भी उल्लेख करते हुए पर्यावरण संरक्षण में उनके योगदान पर भी प्रकाश डाला।

हरिभूमि

रोहतक -महेन्द्रगढ़

5 Jun 2021

हकेंवि में कोविड-19 मुद्दे एवं चुनौतियां पर अंतरराष्ट्रीय व्याख्यान

जनसहयोग से धीरे-धीरे कोरोना की दूसरी लहर को भी करेंगे पार: वीसी

कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने विवि में शुरू की गई ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला के उद्घाटन सत्र में किया संबोधित

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। हकेंवि में आयोजित अंतरराष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ व अन्य। फोटो: हरिभूमि

कोविड-19 की पहली लहर के मुकाबले दूसरी लहर ज्यादा खतरनाक रही और सरकार ने जनसहयोग से धीरे-धीरे अब इस बाधा से भी पार पाना शुरू कर दिया है। समय मुश्किल है और चुनौती बड़ी है। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने विश्वविद्यालय में शुरू की गई ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला के उद्घाटन सत्र में व्यक्त किए।

इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में नीति आयोग भारत सरकार के सलाहकार सुधेंदु ज्योति सिंहा ने भी सभी प्रतिभागियों को संबोधित किया और कोरोना महामारी से निपटने के लिए जमीनी स्तर पर लागू कार्य योजना के संबंध में विचार व्यक्त किए। विश्वविद्यालय के भूगोल व राजनीति विज्ञान विभाग के साझा प्रयासों से आयोजित इस ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला के पहले व्याख्यान में कोरोना महामारी से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग जुटाने हेतु प्रयास विषय पर केंद्रित इस व्याख्यान की शुरूआत विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कोरोना महामारी के बीच विश्वविद्यालय स्तर पर विभिन्न जागरूकता प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस मुश्किल घड़ी में भी विभिन्न बाधाओं के बावजूद विश्वविद्यालय ने सफलतापूर्वक राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियांवयन की दिशा में अग्रसर है और विभागीय स्तर पर पूरे उत्साह के साथ आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है।

विशेषज्ञ वक्ता सुधेंदु ज्योति सिंहा ने अपने संबोधन में कोरोना महामारी के खिलाफ भारत की लड़ाई पर केंद्रित प्रस्तुतीकरण के माध्यम से बताया कि किस तरह से विभिन्न चुनौतियों का सामना किया गया। उन्होंने कहा कि नीति आयोग के अंतर्गत हमें विशेष रूप से निजी क्षेत्रों, स्वयंसेवी संस्थाओं व अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ साझेदारी करने व उनसे सहयोग जुटाने की जिम्मेदारी मिली थी।

कॉलेज छात्राओं ने चलाया कोरोना से बचाव के लिए जागरूकता अभियान

सतनाली मंडी। कोविड-19 को लेकर आमजन को जागरूक करने के लिए शुक्रवार को राजकीय महाविद्यालय सतनाली में उपप्राचार्य वीरेंद्र सिंह की अध्यक्षता में 11 छात्राओं की टीम का गठन किया गया। यूथ रेडक्रॉस इंचार्ज डा. सुनीता भारद्वाज के नेतृत्व में इस टीम ने शुक्रवार को कस्बे में स्लम बस्ती में मास्क बांटे और वहां रह रहे प्रवासियों को कोविड-19 के प्रति जागरूक किया। उन्हें इससे बचाव के लिए जारी नियमों से अवगत करवाया। डा. सुनीता भारद्वाज ने बताया कि जागरूक रहकर तथा नियमों का पालन करके कोरोना से बचा जा सकता है। उपप्राचार्य वीरेंद्र सिंह ने बताया कि कॉलेज की छात्राओं की 11 सदस्यीय टीम बनाई गई है। जो यूथ रेडक्रॉस इंचार्ज डा. सुनीता भारद्वाज के नेतृत्व में एक सप्ताह तक विभिन्न स्थानों पर जाकर लोगों को जागरूक करेगी। अभियान शुरू करने से पूर्व कॉलेज में यूथ रेडक्रॉस की राजकीय कॉलेज महेंद्रगढ़ से आई छात्राओं ने ट्रेनिंग भी दी। इस मौके पर प्रो. अजीत सिंह, मोहित व स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

सतनाली मंडी। स्लम बस्ती में मास्क वितरित करती यूथ रेडक्रॉस इंचार्ज डा. सुनीता भारद्वाज।

आपसी सहयोग व सरकार पर विश्वास ही सफलता का सूत्र है : प्रो. कुहाड़

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़ : कोरोना महामारी विश्व के समक्ष खड़ी एक ऐसी अदृश्य वायरस की चुनौती है, जिसका निदान आपसी सहयोग व शासन, प्रशासन पर विश्वास के माध्यम से ही संभव है। कोविड-19 की पहली लहर के मुकाबले दूसरी लहर ज्यादा खतरनाक रही और सरकार ने जनसहयोग से धीरे-धीरे अब इस बाधा से भी पार पाना शुरू कर दिया है। समय मुश्किल है और चुनौती बड़ी है। ऐसे में जिस तरह से भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार, उद्योग जगत, स्वयंसेवी संस्थाएं, शिक्षण संस्थान एवं अन्य सहभागी निरंतर प्रयासरत हैं। मुझे भरोसा है कि हम इस बाधा से भी पार लेंगे और सशक्त, सुदृढ़, समृद्ध आत्मनिर्भर भारत के रूप में अपनी पहचान बनाएंगे। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने विश्वविद्यालय में शुरू की गई आनलाइन व्याख्यान श्रृंखला के उद्घाटन सत्र में व्यक्त किए। विश्वविद्यालय के भूगोल व राजनीति विज्ञान विभाग के साझा प्रयासों से आयोजित इस ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला के पहले व्याख्यान में कोरोना महामारी से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग जुटाने के लिए प्रयास विषय पर केंद्रित इस व्याख्यान की शुरुआत विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुई। इसके पश्चात विश्वविद्यालय

हकेंवि के कुलपति प्रो.आरसी कुहाड़ ने विवि में शुरू की ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला।

की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली डाक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई गई।

स्कूल ऑफ बेसिक साइंस के अधिष्ठाता डा. विनोद कुमार ने विश्वविद्यालय कुलपति व विशेषज्ञ वक्ता का स्वागत किया तथा राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राजवीर दलाल ने व्याख्यान की रूपरेखा प्रस्तुत की। कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने इस अवसर पर कहा कि दिसम्बर 2019 में जब वुहान, चीन में कोरोना का पहला मामला उजागर हुआ था, तभी से समूचा विश्व मानवता की रक्षा के लिए इस चुनौती से निपटने में जुटा हुआ है। यह मुश्किल समय है और इस दौर में हमें सुरक्षा के साथ-साथ अर्थव्यवस्था, जीविकोपार्जन, उद्योग जगत, स्वास्थ्य सेवाओं सभी की बेहतरी के लिए कार्य करना होगा और इस दिशा में सरकार के प्रयासों की जितनी सराहना की जाए वह कम है। कुलपति ने कहा कि भारत बड़े पैमाने पर टीकाकरण अभियान चला रहा है। भारत में देशी-विदेशी कंपनियों को टीके के उत्पादन की मंजूरी मिल रही है। प्रो. कुहाड़ ने कहा कि अब जरूरत है कि मौजूदा हालातों को देखते हुए भविष्य की तैयारी की जाए और यह आपसी सहयोग व विश्वास से ही संभव है। विशेषज्ञ वक्ता सुधेन्दु ज्योति सिन्हा ने कहा कि नीति आयोग के अंतर्गत हमें विशेष रूप से निजी क्षेत्रों, स्वयंसेवी संस्थाओं व अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ साझेदारी करने व उनसे सहयोग जुटाने की जिम्मेदारी मिली थी। यह समय मुश्किल था लेकिन हमने विभिन्न चुनौतियों का मिलकर सामना किया और हमारी टीम ने विभिन्न सहयोगियों की मदद से न सिर्फ बड़े पैमाने पर सहयोग जुटाया, जागरूकता के मोर्चे पर भी उल्लेखनीय प्रयास किए। ज्योति सिन्हा ने कहा कि कोरोना की दूसरी लहर में ऑक्सीजन की उपलब्धता को लेकर विशेष कार्ययोजना के तहत कार्य किया और कोरोना महामारी से पहले ऑक्सीजन का उत्पादन जोकि करीब नौ सौ मिट्रिक टन था वह आज लगभग नौ हजार पांच सौ मिट्रिक टन तक पहुंच गया है। इस समय में चार सौ पचास करीब ऑक्सीजन स्पेशल ट्रेन और भारी संख्या में भारतीय वायुसेना ने खाली टैंकरों को भी एयर लिफ्ट कर संकट से पार पाने में सहयोग किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद दिया।

टीचर्स एलिजिबिलिटी टेस्ट की वैधता सात वर्ष की जगह आजीवन होगी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): केंद्र सरकार ने शिक्षक पात्रता यानी टीचर्स एलिजिबिलिटी टेस्ट (टीईटी) की वैधता आजीवन करने का निर्णय लिया है। इससे पहले अभी तक शिक्षक पात्रता टेस्ट की वैधता परीक्षा के वर्ष से अगले 7 वर्ष तक के लिए मान्य होती थी। केंद्र सरकार द्वारा उठाए गए इस कदम से टीईटी परीक्षा पास करने वाले युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों में विस्तार होगा।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने गुरुवार को घोषणा की है कि सरकार ने 2011 से पूर्वव्यापी प्रभाव से शिक्षक पात्रता की वैधता अवधि को 7 वर्ष से बढ़ाकर आजीवन करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि संबंधित राज्य सरकारें और केंद्र शासित प्रदेश उन उम्मीदवारों को नए टीईटी प्रमाण पत्र जारी करने के लिए आवश्यक कार्रवाई करेंगे जिनकी 7 वर्ष की अवधि पहले ही समाप्त हो चुकी है। शिक्षा मंत्री पोखरियाल ने कहा कि शिक्षण क्षेत्र में करियर बनाने के इच्छुक उम्मीदवारों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने की दिशा में यह एक सकारात्मक कदम होगा।

शिक्षक पात्रता परीक्षा किसी व्यक्ति के लिए स्कूलों में शिक्षक के रूप में नियुक्ति के लिए आवश्यक योग्यताओं में से एक है। राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) के दिनांक 11 फरवरी 2011 के दिशा-निदेशों में कहा गया है कि टीईटी राज्य सरकारों द्वारा आयोजित की जाएगी। टीईटी प्रमाणपत्र की वैधता टीईटी पास करने की तारीख से 7 वर्ष तक थी। 12वीं परीक्षा रद्द करने पर शिक्षा मंत्री निशंक ने कहा- शिक्षा व्यवस्था में लगभग 33 करोड़ विद्यार्थियों की सुरक्षा, स्वास्थ्य तथा उनका उज्जवल भविष्य हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति से भारत बनेगा वैश्विक ज्ञान शक्ति का केंद्र'

जगमार्ग न्यूज

महेंद्रगढ़। भारत को वैश्विक ज्ञान शक्ति का केन्द्र बनाने में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका महत्त्वपूर्ण होगी। यह वह नीति है जो इंडिया को भारत का रूप प्रदान करते हुए उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था के साथ-साथ एक ऐसे उत्कृष्ट राष्ट्र की स्थापना में सहायक होगी जोकि समूचे विश्व में अपनी ज्ञान परम्परा के द्वारा पहचाना जाएगा।

⇨ यह नीति भविष्य की नींव मजबूत करने वाली है

यह नीति भारत की पुरातन सांस्कृतिक परम्परा व ज्ञान की श्रृंखला को संजोते हुए भविष्य की नींव मजबूत करने वाली नीति है। उक्त विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के कुलपति कुहाड़ ने राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमिता और प्रबंधन संस्थान निफ्टेम सोनीपत द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के सदंर्भ में अनुसंधान, नवाचार, पाठ्यचर्या पर रणनीतिक योजनाएँ विषय पर आयोजित वेबिनार को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। निफ्टेम के अंतर्गत आने वाले कॉनट्रेक्ट रिसर्च ऑर्गनाजेशन (सीआरओ) रिसर्च सेल द्वारा आयोजित इस वेबिनार में हकेवि के कुलपति कुहाड़ ने मुख्य वक्ता के रूप में वेबिनार को सम्बोधित किया। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 पॉलिसी इमप्लिमेंटेशन एंड स्ट्रेटेजिक प्लान विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि किस तरह से इस नीति को सफलता के साथ लागू किया जा सकता है।

पंजाब केसरी
THU,03 JUNE 2021
EDITION: REWARI KESARI, PAGE NO. 2

'सतत् विकास के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की पर्याप्त उपलब्धता आवश्यक: प्रो. कुहाड़'

महेंद्रगढ़, 2 जून (परमजीत/मोहन): आजादी के बाद से ही भारत ऊर्जा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है और इस प्रगति का सीधा संबंध भी विकास से जुड़ा है।

विश्व में सम्पन्नता के आकलन का पैमाना भी ऊर्जा खपत को ही रखा गया है। ऊर्जा संसाधनों के मोर्चे पर आत्मनिर्भरता, विभिन्न स्तर पर देश के विकास, विशेषकर आर्थिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है और इस प्रयास में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की भूमिका अहम सिद्ध हो सकती है। बात चाहे हाइड्रो एनर्जी की हो, विंड एनर्जी, न्यूक्लियर एनर्जी, सोलर व बायो एनर्जी की, सभी से ही सतत् विकास के लक्ष्य को पाया जा सकता है, इसलिए इस दिशा में विभिन्न स्तर पर मिलकर काम करने की आवश्यकता है। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने बुधवार को भौतिक एवं खगोल भौतिकी विभाग द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अन्तर्गत आयोजित विशेषज्ञ व्याख्यान को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्रोफैसर प्रभाकर सिंह तथा बोर्ड ऑफ रेडियोआइसोटॉप एंड टैक्नोलॉजी (बी.आर.आई.टी.), मुम्बई की साइंटिस्ट (ई) प्रसन्ना राव भी उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम के संयोजक व भौतिक एवं खगोल भौतिकी विभाग विभागाध्यक्ष डॉ. सुनील कुमार ने कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ व विशेषज्ञ वक्ताओं का स्वागत किया और कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के विषय में बताया और इसके माध्यम से युवा पीढ़ी को होने वाले लाभों से भी अवगत कराया। कुलपति ने कहा कि केंद्र की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार लगातार इस दिशा में उल्लेखनीय प्रयास कर रही फिर वो चाहे सोलर एनर्जी का विकास हो, हाइड्रो, न्यूक्लियर या फिर बॉयो एनर्जी के स्तर पर विकास की बात हो। कुलपति ने कहा कि अन्य संस्थानों को भी इसी तरह से युवा पीढ़ी को विभिन्न स्तर पर जागरूक करने की दिशा में काम करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की ओर से इस दिशा में निरंतर प्रयास जारी है और मध्यप्रदेश के रेवा में विकसित 750 मैगावाट क्षमता वाला सोलर पॉवर प्रोजैक्ट ऐसा ही एक उल्लेखनीय प्रयास है।

हरिभूमि

रोहतक -महेन्द्रगढ़

3 Jun 2021

आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत सीयू में हुआ वेबिनार

नवीकरणीय के लिए ऊर्जा स्त्रोतों की भूमिका अहम सिद्ध हो सकती

- देश के आजाद होने के बाद से ही भारत ऊर्जा के क्षेत्र में निरंतर कर रहा है प्रगति

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

आजादी के बाद से ही भारत ऊर्जा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है और इस प्रगति का सीधा संबंध भी विकास से जुड़ा है। विश्व में सम्पन्नता के आंकलन का पैमाना भी ऊर्जा खपत को ही रखा गया है। ऊर्जा संसाधनों के मोर्चे पर आत्मनिर्भरता, विभिन्न स्तर पर देश के विकास, विशेषकर आर्थिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है और इस प्रयास में नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों की भूमिका अहम सिद्ध हो सकती है। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने बुधवार को भौतिक एवं खगोल भौतिकी विभाग द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत आयोजित विशेषज्ञ व्याख्यान को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर प्रभाकर सिंह तथा बोर्ड ऑफ रेडियोआइसोटॉप एंड टेक्नोलॉजी (बीआरआईटी), मुंबई की साइंटिस्ट (ई) प्रसन्ना राव भी उपस्थित रही। हकेवि के भौतिक एवं खगोल भौतिकी विभाग के द्वारा पोस्ट इंडिपेंडेंस सनेरियो ऑफ रिन्यूबल एनर्जी रिसोर्स इन इंडिया विषय पर केंद्रित इस वेबिनार का प्रारंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई गई। कार्यक्रम के संयोजक व भौतिक एवं खगोल भौतिकी विभाग विभागाध्यक्ष डॉ.सुनील कुमार ने कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ व विशेषज्ञ वक्ताओं का स्वागत किया और कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने अवगत कराया।

महेंद्रगढ़। वेबिनार में भाग लेते हुए वक्ता। फोटो: हरिभूमि

विकास पर प्रकाया डाला

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने अपने संबोधन में विस्तार से आजादी के महत्व और आजाद भारत में विभिन्न क्षेत्रों में हुए विकास और भविष्य की कार्ययोजना पर प्रकाश डाला। विशेषज्ञ वक्ता के रूप में वेबिनार में शामिल प्रो. प्रभाकर सिंह ने हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की प्रगति की सराहना करते हुए अपने वक्तव्य की शुरूआत की और बताया कि भारत में किस तरह से नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोतों के विकास की प्रक्रिया जारी है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की ओर से इस दिशा में निरंतर प्रयास जारी है और मध्यप्रदेश के रेवा में विकसित 750 मेगावाट क्षमता वाला सोलर पॉवर प्रोजेक्ट ऐसा ही एक उल्लेखनीय प्रयास है। इसी क्रम में प्रसन्ना राव ने न्यूक्लिर एनर्जी पर अपने विचार व्यक्त किए और बताया कि किस तरह से यह ऊर्जा का स्रोत मानवता की भलाई के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। वेबिनार के समन्वयक डॉ. विनोद कुमार व डॉ. सुनील कुमार ने बताया कि इस आयोजन में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोद्यार्थी, विद्यार्थियों सहित शिक्षणेत्तर कर्मचारी व अधिकारी भी शामिल हुए। उन्होंने आयोजन समिति के सदस्यों में शामिल शिक्षक डॉ. राकेश कुमार, डॉ. जसवंत कुमार, डॉ. राम अवतार, डॉ. अंशु, डॉ. मनोज कुमार सिंह, डॉ. मनीष कुमार तथा डॉ. शरण प्रसाद का भी आभार व्यक्त किया। आयोजन के दौरान विभाग में सहायक आचार्य डॉ. मीनू ठाकुर ने संचालन का कार्य किया, जबकि कार्यक्रम के अंत में गणित विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. राजेश कुमार गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

विश्व में संपन्नता के आंकलन का पैमाना भी उर्जा खपत

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़ : आजादी के बाद से ही भारत ऊर्जा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है और इस प्रगति का सीधा संबंध भी विकास से जुड़ा है। विश्व में संपन्नता के आंकलन का पैमाना भी ऊर्जा खपत को ही रखा गया है। ऊर्जा संसाधनों के मोर्चे पर आत्मनिर्भरता, विभिन्न स्तर पर देश के विकास, विशेषकर आर्थिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है और इस प्रयास में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की भूमिका अहम सिद्ध हो सकती है।

बात चाहे हाइड्रो एनर्जी की हो, विंड एनर्जी, न्यूक्लियर एनर्जी, सोलर व बायो एनर्जी की, सभी से ही सतत विकास के लक्ष्य को पाया जा सकता है। इसलिए इस दिशा में विभिन्न स्तर पर मिलकर काम करने की आवश्यकता है। यह विचार हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने बुधवार को भौतिक एवं खगोल

वीएचयू व वीआरआइटी के विषय विशेषज्ञों ने किया संबोधित, आजादी के बाद से ही भारत ऊर्जा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है

भौतिकी विभाग द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अन्तर्गत आयोजित विशेषज्ञ व्याख्यान को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर विशेषज्ञ वक्ता के रूप में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर प्रभाकर सिंह तथा बोर्ड ऑफ रेडियो आइसोटॉप एंड टेक्नोलॉजी (बीआरआईटी), मुम्बई की साइंटिस्ट (ई) प्रसन्ना राव भी उपस्थित रहीं। हकेवि के भौतिक एवं खगोल भौतिकी विभाग के द्वारा पोस्ट इंडिपेंडेंस सनेरियो ऑफ रिन्यूबल एनर्जी रिसोर्स इन इंडिया विषय पर केंद्रित इस वेबिनार का प्रारम्भ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इसके पश्चात विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली डाक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई गई। भौतिक एवं खगोल भौतिकी विभाग विभागाध्यक्ष डा.सुनील कुमार ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के विषय में बताया। कुलपति ने कहा कि अन्य संस्थानों को भी इसी तरह से युवा पीढ़ी को विभिन्न स्तर पर जागरूक करने की दिशा में काम करना चाहिए। प्रो. प्रभाकर सिंह ने हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की प्रगति की सराहना की।उन्होंने बताया कि भारत में किस तरह से नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोतों के विकास की प्रक्रिया जारी है। उन्होंने बताया कि भारत में हाइड्रो ऊर्जा के विकास की शुरूआत सन 1980 में हुई जबकि सोलर, विंड और बायोमास के स्तर पर कार्य 1998 के आसपास से आरंभ हुआ। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की ओर से इस दिशा में निरंतर प्रयास जारी है और मध्यप्रदेश के रेवा में विकसित 750 मेगावाट क्षमता वाला सोलर पॉवर प्रोजेक्ट ऐसा ही एक उल्लेखनीय प्रयास है। डा. विनोद कुमार व डा. सुनील कुमार ने बताया कि इस आयोजन में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोद्यार्थी, विद्यार्थियों सहित शिक्षणेत्तर कर्मचारी व अधिकारी भी शामिल हुए। उन्होंने आयोजन समिति के सदस्यों में शामिल शिक्षक डा. राकेश कुमार, डा. जसवंत कुमार, डा. राम अवतार, डा. अंशु, डा. मनोज कुमार सिंह, डा. मनीष कुमार तथा डा. शरण प्रसाद का भी आभार व्यक्त किया। आयोजन के दौरान विभाग में सहायक आचार्य डा. मीनू ठाकुर ने संचालन का कार्य किया जबकि कार्यक्रम के अंत में गणित विभाग के विभागाध्यक्ष डा. राजेश कुमार गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

महोत्सव आजादी का अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत वेबिनार का हुआ आयोजन

विकास के लिए ऊर्जा स्रोतों की पर्याप्त उपलब्धता आवश्यक : प्रो. कुहाड़

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंविवि) अमृत महोत्सव अभियान के अंतर्गत विशेषज्ञ व्याख्यान आयोजित किया गया। इस मौके पर मुख्य वक्ता के रूप में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्रो. प्रभाकर सिंह, बोर्ड ऑफ रेडियो आइसोटॉप एंड टेक्नोलॉजी (बीआरआईटी) मुंबई की साइंटिस्ट (ई) प्रसन्ना राव भी उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता हकेंविवि के कुलपति आरसी कुहाड़ ने की। हकेंविवि के भौतिक एवं खगोल भौतिकी विभाग के द्वारा पोस्ट इंडिपेंडेंस सनेरियो ऑफ रिन्यूबल एनर्जी रिसोर्स इन इंडिया विषय पर केंद्रित इस वेबिनार का प्रारंभ विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। विश्वविद्यालय की प्रगति को प्रदर्शित करने वाली डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई गई। कार्यक्रम के संयोजक, भौतिक एवं खगोल भौतिकी विभाग विभागाध्यक्ष डॉ. सुनील कुमार ने कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़, विशेषज्ञ वक्ताओं का स्वागत किया और

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़। संवाद

कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। इसके पश्चात आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा ने इस आयोजन के विषय में बताया और इसके माध्यम से युवा पीढ़ी को होने वाले लाभों से भी अवगत कराया।

कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि आजादी के बाद से ही भारत ऊर्जा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है और इस प्रगति का सीधा संबंध भी विकास से जुड़ा है। विश्व में सम्पन्नता के आंकलन का पैमाना भी ऊर्जा खपत को ही रखा गया है। ऊर्जा संसाधनों के मोर्चे पर आत्मनिर्भरता, विभिन्न स्तर पर देश के विकास, विशेषकर आर्थिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है और इस प्रयास में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की भूमिका अहम सिद्ध हो सकती है। बात चाहे हाइड्रो एनर्जी की हो, विंड एनर्जी, न्यूक्लियर एनर्जी, सोलर व बायो एनर्जी की, सभी से ही सतत विकास के लक्ष्य को पाया जा सकता है, इसलिए इस दिशा में विभिन्न स्तर पर मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

मुख्य वक्ता प्रो. प्रभाकर सिंह ने बताया कि भारत में किस तरह से नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोतों के विकास की प्रक्रिया जारी है।उन्होंने बताया कि भारत में हाइड्रो ऊर्जा के विकास की शुरूआत सन 1980 में हुई जबकि सोलर, विंड और बायोमॉस के स्तर पर कार्य 1998 के आसपास से आरंभ हुआ। उन्होंने बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग की समस्या का उल्लेख करते हुए कहा कि अब अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हम नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोतों के विकास की दिशा में बड़े पैमाने पर कोशिश तेज करें। प्रसन्ना राव ने न्यूक्लियर एनर्जी पर अपने विचार व्यक्त किए उन्होंने बताया कि कि ऊर्जा का यह स्रोत भारत के संदर्भ में बहुत उपयोगी, नवीकरणीय ऊर्जा का स्रोत सिद्ध हो सकता है इसलिए इसके विकास पर विशेष बल दिए जाने से हम अपने को वर्तमान, भविष्य की आवश्यकताओं को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के योग्य बन सकते हैं।

वेबिनार के समन्वयक डॉ. विनोद कुमार, डॉ. सुनील कुमार ने बताया कि इस आयोजन में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोद्यार्थी, विद्यार्थियों सहित शिक्षणेत्तर कर्मचारी व अधिकारी भी शामिल हुए। उन्होंने आयोजन समिति के सदस्यों में शामिल शिक्षक डॉ. राकेश कुमार, डॉ. जसवंत कुमार, डॉ. राम अवतार, डॉ. अंशु, डॉ. मनोज कुमार सिंह, डॉ. मनीष कुमार, डॉ. शरण प्रसाद का भी आभार व्यक्त किया।

हकेंवि विभागीय स्तर पर मनाएगा अमृत महोत्सव

संवाद सूत्र, महेंद्रगढ़: आजादी के 75 वर्ष की यात्रा पूर्ण होने से पूर्व देशभर में 75 सप्ताह का आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। दांडी मार्च के 91 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 12 मार्च, 2021 को भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आजादी का अमृत महोत्सव का प्रारंभ किया था। इस अभियान में विभिन्न महाविद्यालय व विश्वविद्यालय भी अपने-अपने स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ ने इस दिशा में एक कदम आगे बढ़ाते हुए अपने यहां के सभी विभागों को इस अभियान के अंतर्गत अपने-अपने क्षेत्र विशेष पर केंद्रित आनलाइन व्याख्यान, वेबिनार व कार्यशालाओं का आयोजन करने के लिए निर्देशित किया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ का इस संदर्भ में कहना है कि आजादी का सही मूल्य आज की पीढ़ी को समझाने के लिए आवश्यक है कि हम इस बात से अवगत हों कि भारत किस तरह से गुलामी की जंजीरों से आजाद हुआ और उसके बाद इसने किस तरह से प्रगति की और विकास के नए आयामों को प्राप्त किया। इस आयोजन के माध्यम से हमारी कोशिश विभिन्न क्षेत्रों में भारत की मौजूदा स्थिति पर चर्चा के साथ-साथ अगले पांच से दस वर्षों में संभावित विकास की संभावनाओं पर भी विचार करना है और विश्वविद्यालय में होने वाले विभिन्न आयोजनों में इस विषय पर भी विस्तार से संवाद किया जाए। अब वह समय आ गया है कि हम अर्थशास्त्र, भूगोल, बायोटेक्नोलाजी, न्यूट्रीशन साइंस से लेकर जनसंचार, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान, योग-विज्ञान, संस्कृत व समाजशास्त्र आदि के क्षेत्र में आजादी के बाद की प्रगति व विकास की चर्चा कर, वर्तमान स्थिति का आंकलन करें और भविष्य की कार्ययोजना का निर्धारण कर, इन क्षेत्रों में प्रगति की नयी संभावनाओं को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हों। आजादी का अमृत महोत्सव की मूल आत्मा यही है कि हम आजादी का मूल्य समझें और इसे बनाये रखते हुए भारत के विकास में सक्रिय योगदान दें।

विभागीय स्तर पर आजादी अमृत महोत्सव मनाएगा हकेंवि

महेंद्रगढ़ | आजादी के 75 वर्ष की यात्रा पूर्ण होने से देशभर में 75 सप्ताह का आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। हकेंवि के सभी विभाग अपने-अपने क्षेत्र विशेष पर केन्द्रित ऑनलाइन व्याख्यान, वेबिनार व कार्यशालाओं का आयोजन करेंगे। विवि कुलपति प्रो. आर. सी. कुहाड़ का इस संदर्भ में कहना है आजादी का सही मूल्य आज की पीढ़ी को समझाने के लिए आवश्यक है कि हम इस बात से अवगत हों कि भारत किस तरह से गुलामी की जंजीरों से आजाद हुआ और उसके बाद इसने किस तरह से प्रगति की और विकास के नए आयामों को प्राप्त किया। इस आयोजन के माध्यम से हमारी कोशिश विभिन्न क्षेत्रों में भारत की मौजूदा स्थिति पर चर्चा के साथ-साथ अगले पांच से दस वर्षों में संभावित विकास की संभावनाओं पर भी विचार करना है। अब वह समय आ गया है कि हम अर्थशास्त्र, भूगोल, बायोटेक्नोलॉजी, न्यूट्रीशन साइंस से लेकर जनसंचार, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान, योग-विज्ञान, संस्कृत व समाजशास्त्र आदि के क्षेत्र में आजादी के बाद की प्रगति व विकास की चर्चा कर, वर्तमान स्थिति का आंकलन करें और भविष्य की कार्ययोजना का निर्धारण कर, इन क्षेत्रों में प्रगति की नयी संभावनाओं को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हों। कुलपति ने कहा कि अवश्य ही विभागीय स्तर पर होने वाले इन आयोजनों की मदद से विद्यार्थियों को इस पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा मिलेगी। विवि में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा का कहना है आयोजन श्रृंखला के अंतर्गत अभी तक सात आयोजन किए जा चुके हैं, और विभागीय स्तर पर इस तरह के आयोजनों की शुरूआत जल्द होने जा रही है।

हकेंविवि विभागीय स्तर पर मनाएगा आजादी का अमृत महोत्सव

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। आजादी के 75 वर्ष की यात्रा पूर्ण होने से पूर्व देशभर में 75 सप्ताह का आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। दांडी मार्च के 91 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 12 मार्च, 2021 को भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आजादी का अमृत महोत्सव का प्रारंभ किया था।

इस अभियान में विभिन्न महाविद्यालय, विश्वविद्यालय भी अपने-अपने स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेविवि), महेंद्रगढ़ ने इस दिशा में एक कदम आगे बढ़ाते हुए अपने यहां के सभी विभागों को इस अभियान के अंतर्गत अपने-अपने क्षेत्र विशेष पर केंद्रित ऑनलाइन व्याख्यान, वेबिनार, कार्यशालाओं का आयोजन करने के लिए निर्देशित किया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि आजादी का सही मूल्य आज की पीढ़ी को समझाने के लिए आवश्यक है कि हम इस बात से अवगत हों कि भारत किस तरह से गुलामी की जंजीरों से आजाद हुआ और उसके बाद इसने किस तरह से प्रगति की और विकास के नए आयामों को प्राप्त किया।

कुलपति ने कहा कि इस आयोजन के माध्यम से हमारी कोशिश विभिन्न क्षेत्रों में भारत की मौजूदा स्थिति पर चर्चा के साथ-साथ अगले पांच से दस वर्षों में संभावित विकास की संभावनाओं पर भी विचार करना है और विश्वविद्यालय में होने वाले विभिन्न आयोजनों में इस विषय पर भी विस्तार से संवाद किया जाए।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ के अनुसार अब वह समय आ गया है कि हम अर्थशास्त्र, भूगोल, बायोटेक्नोलॉजी, न्यूट्रीशन साइंस से लेकर जनसंचार, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान, योग-विज्ञान, संस्कृत, समाजशास्त्र आदि के क्षेत्र में आजादी के बाद की प्रगति, विकास की चर्चा कर, वर्तमान स्थिति का आंकलन करें और भविष्य की कार्ययोजना का निर्धारण कर, इन क्षेत्रों में प्रगति की नयी संभावनाओं को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हों। आजादी का अमृत महोत्सव की मूल आत्मा यही है कि हम आजादी का मूल्य समझें और इसे बनाए रखते हुए भारत के विकास में सक्रिय योगदान दें।

कुलपति ने कहा कि अवश्य ही विभागीय स्तर पर होने वाले इन आयोजनों की मदद से युवा विद्यार्थि, शिक्षकों को इस पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा मिलेगी और वे कई गुने उत्साह के साथ इस दिशा में प्रयास तेज करेंगे। विश्वविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान की नोडल ऑफिसर प्रो. सारिका शर्मा का कहना है कि इस आयोजन श्रृंखला के अंतर्गत अभी तक सात आयोजन किए जा चुके हैं और विभागीय स्तर पर इस तरह के आयोजनों की शुरूआत जल्द होने जा रही है। जिससे इस अभियान के मूल लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

WORLD NO TOBACCO DAY AT CUH

Mahendragarh: The Central University of Haryana (CUH) organised a virtual programme on "World No Tobacco Day" with Vice-Chancellor Prof RC Kuhad administering a pledge to teaching and non-teaching employees not to consume tobacco, to motivate others and spread awareness in this regard. "The number of casualties due to diseases caused by the consumption of tobacco and its products is increasing across the world every year so our collective efforts can realise the dream of a tobacco-free society," he added. Prof Dinesh Gupta, dean students welfare, and Dr Anand Sharma, deputy dean (students welfare) also expressed their views on the occasion.

The Tribune Tue, 01 June 2021
https://epaper.tribune

हरिभूमि
रोहतक -महेन्द्रगढ़
1 Jun 2021

बचने को प्रेरित करें

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विवि में विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर आभासी माध्यम से कार्यक्रम का आयोजन किया। विवि के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ शिक्षकों व शिक्षणेत्तर कर्मियों को तंबाकू का सेवन न करने और दूसरों को भी इसके प्रेरित करने तथा इस संबंध में जागरूकता फैलाने का संकल्प दिलाया। तम्बाकू व इससे बने उत्पादों के हानिकारक प्रभावों से न सिर्फ भारत बल्कि समूचा विश्व ग्रसित है और ऐसे में हमारी आपकी जिम्मेदारी बनती है कि इसकी हानियों से न केवल खुद को बचाएं बल्कि इससे समूची मानवता की रक्षा के लिए प्रयास करें।

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस : फिल्म अभिनेताओं का तम्बाकू उत्पादों के विज्ञापन करना चिंतनीय

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

हकेंवि में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर विवि के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि फिल्म अभिनेताओं का तम्बाकू उत्पादों के विज्ञापन करना चिंतनीय है। क्योंकि आमजन इनको बड़ी संख्या में फॉलो करते हैं और इन उत्पादों का सेवन कर अपनी सेहत से खिलवाड़ कर रहे हैं।

उन्होंने सभी उपस्थित शिक्षकों व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को तम्बाकू का सेवन न करने और दूसरों को भी प्रेरित करने तथा जागरुकता फैलाने का संकल्प दिलाया। कुलपति ने कहा तम्बाकू व इससे बने उत्पादों के हानिकारक प्रभावों से न सिर्फ भारत बल्कि समूचा विश्व ग्रसित है। कुलपति ने अभिनेताओं के तम्बाकू उत्पादों के विज्ञापन करने पर भी चिंता व्यक्त की और उन्होंने कहा की भले ही अभिनेता तम्बाकू और उसके उत्पादों का विज्ञापन करते हों लेकिन हमें स्वयं, परिवार, समाज और राष्ट्र को तम्बाकू मुक्त और स्वस्थ जीवन जीने के लिए सदैव प्रेरित करना चाहिए। विवि के छात्र कल्याण अधिष्ठाता कार्यालय की ओर से आयोजित इस आभासी कार्यक्रम में भारी संख्या में शिक्षकों व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने भाग लिया।

छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. दिनेश गुप्ता व उप छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ. आनंद शर्मा ने बताया आयोजन में विवि के विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, प्रभारी, शिक्षक व शिक्षणेत्तर कर्मचारी उपस्थित रहे।

महेंद्रगढ़ में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर हकेंवि में आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़

तंबाकू का सेवन बीमारियों को न्यौता : विजय सिंह

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

उपमंडल विधिक सेवा समिति महेंद्रगढ़ के विधिक सेवक विजय सिंह ने श्री गोशाला महेंद्रगढ़ के सामने मजदूरों के साथ विश्व तंबाकू निषेध दिवस मना कर मजदूरों को जागरूक किया। विजय सिंह ने बताया कि पूरे विश्व में यह दिवस 31 मई को मनाया जाता है।

तंबाकू सेवन से फेफड़ों का कैंसर, लीवर कैंसर, हृदय रोग, कोलन कैंसर, मुंह का कैंसर होता है। अंत में तंबाकू सेवन करने वाले व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। धूम्रपान करने वाले के साथ बैठने वाले लोग भी अनेक बीमारी के शिकार हो जाते हैं। क्योंकि जो व्यक्ति तंबाकू बीड़ी सिगरेट पीकर धुआं बाहर निकालता है तो आसपास रहने वाले लोगों पर उस प्रदूषित वायु का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। जिस से एलर्जी, ब्लड प्रेशर, खाज, खुजली, हार्ड अटैक, सीने में दर्द, ब्रेन का रुकना जैसी अनेक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। इसलिए तंबाकू का सेवन ना करें और ना ही अपने साथियों को करने दे जीवन बहुत अनमोल है। इसे व्यर्थ ना गवाएं।

विजय सिंह ने बताया कि बताया कि अनेक परिवारों में बड़े बुजुर्ग अपने घरों में ग्रुप में बैठकर हुक्का पीते हैं उन सभी को देखकर उस परिवार के बच्चे भी धूम्रपान करने के आदी हो जाते हैं। इसलिए धूम्रपान न करें। जिससे आपको देखकर आपके बच्चे धूम्रपान के शिकार हो जाएं। आओ आज के दिन हम सभी मिलकर शपथ ले की भविष्य में कभी भी धूम्रपान तंबाकू का सेवन नहीं करेंगे। अपने सभी मिलने वालों को धूम्रपान का सेवन नहीं करने के लिए जागरूक भी करेंगे। अपने परिवार को स्वस्थ रखने के लिए तमाखू का बहिष्कार करें।

'ह.कें.वि. में प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग टैक्नोलॉजी पर व्याख्यान आयोजित'

महेंद्रगढ़, 29 जून (स.ह., परमजीत): हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में विद्यार्थियों को विषय का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग टैक्नोलॉजी विभाग द्वारा मंगलवार को विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ के निर्देशन व मार्गदर्शन में आयोजित इस वैबीनार में मुख्य अतिथि के रूप में दीनबंधु छोटूराम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मुरथल के कुलपति प्रो. आर.के. अनायत उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में विशेषज्ञ वक्ता के रूप में आई.पी.ए.एम.ए. के अध्यक्ष व एशिया प्रिंट के उपाध्यक्ष, ग्लोबल प्रिंट एडवाइजर एस. दयाकर रेड्डी, फाऊंडेशन फॉर इनोवेटिव पैकेजिंग एंड सस्टेनेबिलिटी के अध्यक्ष प्रो. एन.सी. शाह व अरसान गणेशन पॉलीटैक्निक कॉलेज के प्रिंसीपल डा. एम. नंद कुमार उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने अपने संदेश के माध्यम से इस तरह के आयोजनों को विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण बताया। वैबीनार में मुख्य अतिथि प्रो. आर.के. अनायत ने बदलते समय के साथ प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग के क्षेत्र में आ रहे बदलावों से अवगत करवाया और इस क्षेत्र में भविष्य निर्माण की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

ह.कें.वि. में आयोजित वैबीनार को सम्बोधित करते विशेषज्ञ।

इसी क्रम में एस. दयाकर रेड्डी ने प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में विद्यार्थियों के रुझान और मौजूदा समय में इंडस्ट्री की जरूरतों पर चर्चा की। वैबीनार में विशेषज्ञ वक्ता प्रो. एन.सी. साहा ने इस क्षेत्र में जारी विभिन्न बदलावों और उसके अनुरूप आवश्यक शिक्षण-प्रशिक्षण की आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के सफल संचालन में प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग विभाग के सहायक आचार्य तरुण कुमार, शम्मी मेहरा, निशान सिंह व अनिल कुंडु ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

धन्यवाद ज्ञापन विभाग के सहायक आचार्य संदीप बूरा ने प्रस्तुत किया। आयोजन में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, विद्यार्थी व शोधार्थी ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित रहे।